चन्दामामा
माँ-बच्चों का मासिक पत्र
1st OCT '51
6
as

Chandamama, October '51 Photo by U. Yeshwant Mallya

मीठी मुसकान

नागपुर ब्रांच . . . . : माउन्ट होटल के पीछे

कलकत्ता बिक्री केन्द्र . : ४ ताराचन्द दत्त स्ट्रीट

हाथरस ब्रांच . . . . : . . . पसरहट्टा बाजार

. . यहाँ से आम जनता एवं एजण्टगण अपनी . .

आवश्यकतानुसार हमारी सभी वस्तुएँ खरीद सकते हैं।

ठीक-ठीक समय देने वाली इस देश के उपयुक्त। प्रत्येक की गारंटी ३ साल।

नं० २४		साइज ६॥।	
५ जुएल क्रोम	३२)	रोल्ड गोल्ड	३७)
७ जुएल क्रोम	३७)	सुपीरियर	३६)
१५ जुएल क्रोम	४४)	रोल्ड गोल्ड	४६)

नं० २५		साइज ८॥।	
५ जुएल क्रोम	२८)	रोल्ड गोल्ड	३३)
७ जुएल क्रोम	३२)	सुपीरियर	३६)
१५ जुएल क्रोम	४३)	रोल्ड गोल्ड	४८)

नं० २६		साइज ६॥।	
५ जुएल क्रोम	२१)	रोल्ड गोल्ड	२४)
१५ जुएल क्रोम	४४)	रोल्ड गोल्ड	५४)
टाइम पीस	२०)	सुपीरियर	२५)
पाकेट वाच	१२)	सुपीरियर	१५)

पोस्टेज अलावे। दो लेने पर माफ

घड़ियाँ V. P. से भेजी जाती हैं। आर्डर देते समय घड़ी नंबर व ज्वेल्स साफ-साफ लिखें।

फिल्मी बांसुरी

पीतल की इंगलिश ट्यून्ड उच्च श्रेणी की सुरीली फिल्मी बाँसुरी जिसकी मधुर तान आप सिनेमाओं में सुनते हैं मूल्य ४) रु० डा० खर्च १)

बाँसुरी शिक्षक मूल्य १॥) डा० खर्च ।) अलग।

पत्र व्यवहार केवल अंग्रेजी में करें।

CHHAYA VARIETY STORES (WB)
P.O. 13 - ALIGARH (U.P.)

अमेरिकन स्प्रिट स्टोव

वजन में हल्के हैं। चाय, गर्म पानी, दूध इत्यादि पकाने के लिये घर में, सफर में उपयोगी हैं। थोडी सी स्प्रिट देर तक काम देती है। मूल्य Rs. 3-4/- स्पेशल क्वालिटी Rs. 5/- डाक खर्च 1-8/- अलग।

करामाती ताला

इस ताले पर अंग्रेजी अक्षर खुदे हुए हैं जिनको मिला कर आप ताला खोल और बंद कर सकते हैं। आप के सिवा कोई नहीं खोल सकता मूल्य Rs. 2-8/- डाक खर्च Rs. 1-4/- अलग। पत्र व्यवहार केवल अंग्रेजी में करें।

पता : CHHAYA VARIETY STORES (SLC)
P. O. 13. ALIGARH (U.P.)

घर बैठे हिन्दी सीखिये।

SELF HINDI TEACHER

पुस्तक द्वारा केवल ३ दिन में हिन्दी बिना किसी शिक्षक के लिखना, पढ़ना और बोलना सीखिये मूल्य Rs. 3/- पोस्टेज As-/12/- अलग।

सुपारी काटने की मशीन

BETUL NUT CUTTING MACHINE

पीतल की बनी यह मशीन एक घंटे में ५ सेर तक सुपारी जिस प्रकार की चाहें याने दाने, वर्क, लच्छे इत्यादि काट सकते हैं। मूल्य Rs. 11/8/- डाकखर्च Rs. 2/8/- अलग

पत्र व्यवहार केवल अंग्रेजी में करें।

Address : NAVASHAKTI TRADERS (C. M.)
MAHAVIRGANJ, ALIGARH. (U. P.)

सोलार पेन्स
बहुत सस्ते हैं
शास्त्री पेन वर्क्स ★ तेनाली

वर्ष 3
अंक 2

अक्तूबर
1951

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

कन्हैया के आने की खबर सुन कर कंस के मन में खलबली मच गई। उसने कुवलय-पीडन नामक एक भयंकर हाथी को तैयार करवाया और महावत से कह कर कन्हैया को मारने भेजा। कन्हैया और बलराम जब उस ओर आए तो महावत ने हाथी को उन पर दौड़ाया। तब कन्हैया और बलराम हाथी के खंभों जैसे चारों पावों के बीच लुकाछुपी खेलने लगे। आखिर हाथी और महावत दोनों थक गए तो कन्हैया ने जान-बूझ कर अपने को हाथी की सूँड में पकड़ा दिया। हाथी ने सोचा—'अच्छा मौका है' और उन्हें उठा कर जमीन पर पटकना चाहा। लेकिन कन्हैया ने उसकी सूँड को पकड़कर मरोड़ दिया फिर उसी का एक दाँत उखाड़ कर, उससे अंकुश की तरह भौंका तो हाथी चिंघाड़ कर पहाड़ की तरह जमीन पर गिरा और प्राण छोड़ दिए। उसके इस तरह गिरने के कारण सारा मथुरा नगर डोल उठा जैसे कोई भूचाल आ गया हो।

✓
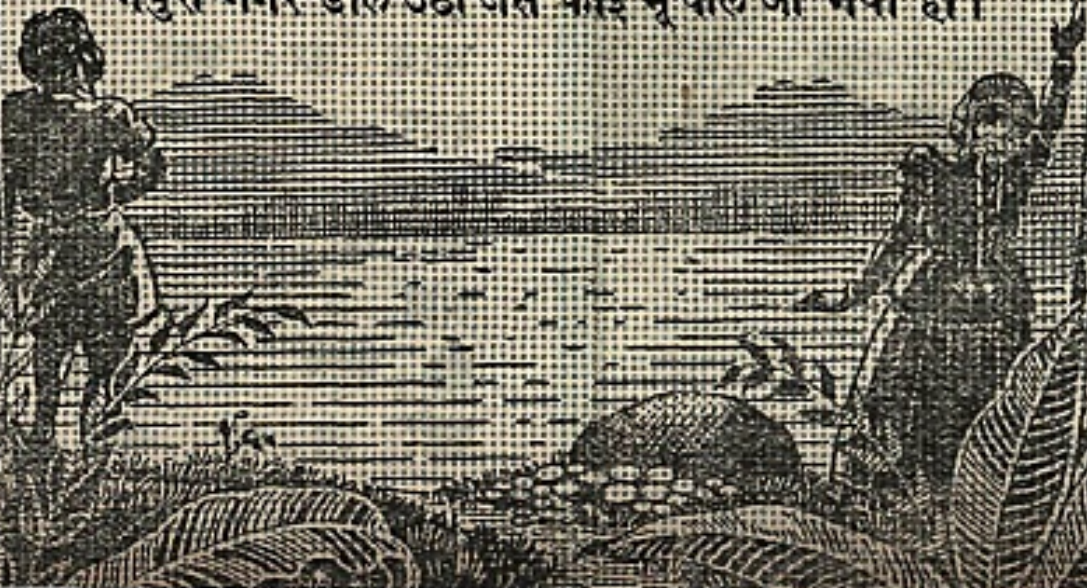
दूरदर्शिता

एक बूढ़ा शेर था जो
कर न सकता था शिकार।
बदन में फुर्ती नहीं थी,
बना जीवन एक भार।

सोचने तब लगा वह यों—
'हाय! अब मैं क्या करूँ?
पेट तो भरता नहीं; मैं
क्या यहीं भूखों मरूँ!'

किंतु आखिर उसे सूझी
बड़ी अच्छी एक चाल—
बैठ जिससे बेफिकर वह
सके अपना पेट पाल।

इक अँधेरी खोह में जा
दुबक बैठा शेर वह।
भटक कर आए मृगों को
हड़प जाता इस तरह।

था रहा करता कभी उस
खोह में ही इक सियार—
जो बहुत दिन बाद लौटा
कहीं जा कर नदी पार।

' वैरागी '

थके सियार मियाँ पहुँचे
खोह के नजदीक, पर
वहाँ क्या देखा? न जाने
रह गए बस, ठिठक कर।

भूमि पर मृग के पगों की
थी असंख्य निशानियाँ।
बात एक अजीब थी जिस
से उसे शक हो गया।

थे सभी पद-चिह्न अंदर
की तरफ ही रुख किए।
चिह्न वे कोई न दीखे
खोह से आते हुए।

खड़ा रहा सियार, सब कुछ
झट समझ में आ गया।
कहा उसने —' खोह में आ
एक भी लौट न गया।'

सोच उलटे पैर भागा
झट वहाँ से वह सियार।
मृत्यु-मुख से निकल आया,
था जरा वह होशियार।
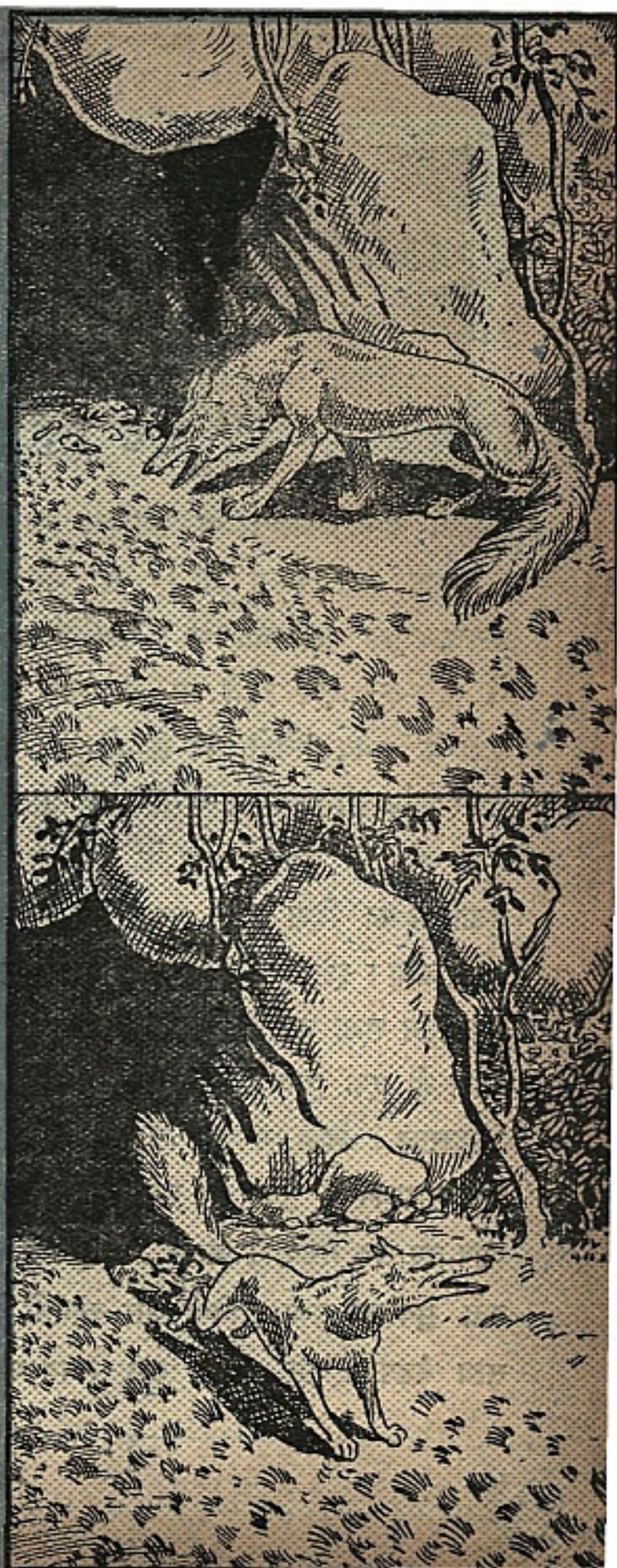
किसी समय कलिंग पर सात्विक नामक राजा राज करता था। वह भगवान जगन्नाथ का बड़ा भक्त था। राज के काम में दिन-रात डूबे रहने पर भी वह रोज पूजा के समय मंत्रियों और सामंतों को साथ लेकर पैदल ही भगवान के मंदिर में जाता। पूजा होने के बाद भगवान के दर्शन करके पुजारियों का दिया हुआ प्रसाद लेकर वह लौट जाता। इस तरह बहुत दिन बीत गए। एक दिन राजा जब रोज की तरह मन्दिर में आया तो एक पुजारी ने निवेदन किया—'महाराज! आज भगवान की पूजा, नैवेद्य और नीराजन में कुछ देर लगेगी। इसलिए आप तब तक मंडप में विराजें!' पुजारी की बात सुन कर राजा मंत्रियों और सामंतों के साथ मंडप में चला गया। उस समय वहाँ कुछ यात्री जुआ खेल रहे थे। 'महाराज आ रहे हैं! तुम लोग किसी दूसरी जगह चले जाओ!' यह कह कर पुजारी ने उन को दूर भगाना चाहा। लेकिन राजा ने रोक कर कहा—'नहीं, नहीं, रहने दो! ये हमारा क्या बिगाड़ते हैं?' जुआरी दाँव लगाते और पाँसा फेंकते जाते थे। कभी कोई जीतता; कभी कोई हारता। जो जीतता उसका चेहरा खुशी से खिल जाता। हारने वाले का चेहरा उदासी से लटक जाता। राजा यह तमाशा देखता हुआ बहुत देर तक वैसे ही खड़ा रह गया। कुछ देर तक इसी तरह देखते रहने के बाद उसके मन में हुआ—'चलो! हम भी एक हाथ खेल लें!' मंत्री, सेनापति और पुरोहित को भी खेल में लगा कर राजा पासा फेंकने लगा।

थोड़ी देर में उसका मन खेल में इतना मग्न हो गया कि उसे देवता के दर्शन की बात ही भूल गई। उधर पूजा पूरी हो गई। द्वार खुल गया था। खबर आई कि राजा भगवान के दर्शन करने आ सकते हैं। लेकिन राजा जुआ खेलने में इतना तन्मय हो गया था कि उसने कुछ सुना ही नहीं। कान में कुछ गया भी तो उस पर कोई ध्यान न दिया। देवता का प्रसाद पहले राजा को दिया जाता था। पीछे सब भक्तों को बाँटा जाता था। इसलिए जब राजा के आने में देर हुई तो औरों को भी ठहरना पड़ा। आखिर एक पुजारी प्रसाद लेकर मंडप में राजा के पास गया और कहा—'महाराज! भगवान का प्रसाद ले लीजिए!' उस समय राजा के दाएँ हाथ में पाँसा था। इसलिए उसने पुजारी की ओर देखे बिना ही अपना बाँया हाथ पसार दिया। यह देख कर पुजारी भौंचक रह गया। वह जानता था कि बाएँ हाथ में प्रसाद लेना देवता के लिए महापराध होगा। यह सोच कर वह प्रसाद दिए बिना ही चला गया। करीब एक घंटे बाद जब खेल खतम हो गया तो राजा को प्रसाद की बात याद आई। उसने पूछा—'मंत्री! क्या अभी तक पूजा खतम नहीं हुई? अभी तक मंदिर के पट नहीं खुले?' मंत्रियों ने डरते डरते सब कुछ निवेदन कर दिया। हठात् राजा मानों एक स्वप्न से जागा। वह सिर पीट कर शोक करने लगा—'हाय! मैंने कितना बड़ा पाप किया? भगवान का प्रसाद पाने आकर मंदिर में जुआ खेलने लग गया! जैसे कोई अमृत पीने आकर शराब पी ले! हाय! इस पाप का अब क्या फल भोगना होगा!' राजा को इस तरह शोक-मग्न देख कर सब

लोग स्तब्ध रह गए। आखिर मंत्रियों ने सांत्वना देते हुए कहा—'महाराज! हमारे भगवान दयालु हैं। वे इस छोटे से अपराध को जरूर क्षमा कर देंगे। चलिए! उनका दर्शन कर प्रसाद पा लें।' इस तरह समझा कर वे उसे भगवान के समक्ष ले गए। भगवान के दर्शन करके राजा ने प्रसाद पा तो लिया। लेकिन उसके हृदय की हलचल शांत न हुई। उसके मन का उद्वेग बढ़ता ही गया मानों उसके हृदय में कोई ज्वालामुखी जल रहा हो। उसकी आँखों के सामने पाँसे साँपों की तरह झलमलाते हुए बारंबार नाचने लगे। उसका महापाप हृदय में बारंबार हथौड़े की तरह चोट करने लगा। उसे फिर फिर याद आने लगा कि कैसे उसने जुए में होश-हवास खोकर भगवान का प्रसाद लेने के लिए बाँया हाथ फैला दिया था। राजा को अपने आप से घोर घृणा हो गई। उसने सोचा—'जिस बाँए हाथ के द्वारा भगवान का इतना बड़ा अपमान हुआ उसे काट कर फेंक देना ही ठीक होगा।' उसका निश्चय पक्का हो गया। लेकिन अपना हाथ वह स्वयं तो नहीं काट सकता था। इसलिए उसने एक उपाय सोचा। एक दिन रात के समय उसने मंत्री को अपने शयनागार में बुला कर कहा—'मंत्री! इधर कुछ दिनों से रोज आधी रात के वक्त एक भूत आता है और इस खिड़की में से हाथ डाल कर मुझे बहुत तंग करता है। किसी तरह उससे मेरा पिंड छुड़ाओ। आज मैं दूसरे कमरे में सोऊँगा। तुम इसी कमरे में रहो और जाग कर पहरा दो। ज्यों ही वह भूत खिड़की में से हाथ डाले, झट उस पर तलवार का वार कर देना!' यह कह कर राजा मंत्री को वहीं छोड़ कर बगल के कमरे में चला गया। मंत्री ने राजा की बात

को सच समझा। इसलिए वह नंगी तलवार हाथ में लेकर पहरा देने लगा। आधी रात हुई। सहसा खिड़की में से किसी ने हाथ डाला। मंत्री ने देखा और फुर्ती से तलवार उठा कर उस पर वार कर दिया। तलवार का वार होते ही हाथ कट कर कमरे में गिर पड़ा। मंत्री को कुतूहल हुआ कि भूत का हाथ कैसा होता है? हाथ देखते ही वह चौंका और झाँक कर बाहर देखा। पर कटे जटायु की तरह राजा वहीं मूर्छित पड़ा हुआ था। मंत्री खिड़की से कूद कर राजा के पास पहुँचा और उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा। वह अपना सिर पीट कर कह रहा था—'महाराज! आज आपने यह क्या अनर्थ कर दिया? मेरे हाथ से यह भयंकर काम क्यों कराया? हाय! अब मैं आपको और दुनिया को कैसे मुँह दिखाऊँ!' तब राजा ने अपनी पीड़ा छिपा कर मुसकुराते हुए कहा—'भई! तुमने कोई अपराध नहीं किया। तुमने तो मेरा बड़ा भारी उपकार किया है। समझ लो, भगवान ने ही इस रूप में मेरे पाप का दंड दिया।' यह कह कर राजा जगन्नाथ की स्तुति करने लगा। मंत्री पागल की तरह अपने बाल नोचने लगा। थोड़ी ही देर में सब लोग वहाँ जमा हो गए। राजा ने जो कुछ हुआ था सच सच उन्हें बता दिया। तुरंत लोगों ने राजा के कटे हुए बाएँ हाथ को एक सवारी में रख कर गाने-बाजे के साथ जुलूस निकाला। दूसरे दिन राजा सब के साथ जगन्नाथ के मंदिर के पास गया। बहुत लोगों ने कहा कि वह अंदर जाए। लेकिन उसने न सुना। उसने कहा—'मैंने भगवान के दरबार में अपराध किया है। इसलिए मैं मंदिर में प्रवेश करने के योग्य नहीं। मैंने अपने पापों के प्रायश्चित्त-स्वरूप हाथ काट डाला। आप

इस हाथ को भगवान के सामने ले जाकर रख दीजिए। जब तक भगवान की आज्ञा न होगी मैं मंदिर में प्रवेश न करूँगा।' राजा की आज्ञा के अनुसार वह कटा हुआ हाथ भगवान के सामने रख दिया गया। पुजारियों ने रोज की तरह पूजा की और नैवेद्य-निवेदन किया। अंत में वे भगवान का प्रसाद राजा को देने आए। महाराज ने अपनी आदत के मुताबिक दोनों हाथ जोड़ कर अंजली में प्रसाद लेना चाहा। लेकिन कटी हुई बाँह सिर्फ़ उठ कर रह गई। यह देख कर सब के हृदय से विषाद का स्रोत बह चला और सबकी आँखें छलछला आईं। लेकिन यह क्या? यह कैसा महाश्चर्य! उनके देखते ही देखते राजा का बाँया हाथ बढ़ने लगा और ठीक पहले जैसा हो गया। राजा ने रोज की तरह दोनों हाथों में प्रसाद लिया। यह देख कर वहाँ जितने भक्त और पुजारी थे सब के सब आश्चर्य-चकित रह गए। उन्होंने कहा—'महाराज! भगवान आपको दंड देंगे? देखिए न, आपके ऊपर वे कितने प्रसन्न हैं!' थोड़ी देर बाद पुजारियों ने अंदर जाकर देखा तो उन्हें एक और अनहोनी बात दिखाई दी। उन्होंने कटा हुआ जो हाथ भगवान के सामने रख दिया था उस में से दिव्य सुगंध आ रही थी। कपडा हटा कर देखा तो हाथ के बदले सुगंधित जड़ी बूटियाँ पड़ी थीं। वे जड़ी-बूटियाँ मंदिर के अहाते में गाड़ दी गईं। धीरे धीरे वे बूटियाँ मंदिर के सारे अहाते में फैल गईं। दूर दूर से भक्त लोग आते और एक एक पौधा अपने साथ ले जाते। इस तरह सारे देश में बूटियाँ पाई जाने लगीं। उसी बूटी का नाम 'दवन' है। आज भी जगन्नाथ की पूजा में इस पौधे का बड़ा महत्व है।

5

[तीन साल तक निरापद स्थान में रख कर अपनी लड़कियों की रक्षा करने के बाद अंत में राजा ने अपनी उतावली के कारण किस तरह उन्हें गँवाया, यह आपने पिछले अंक में पढ़ लिया। उसके बाद क्या हुआ, यह इस अंक में पढ़िए।]

यह कठोर समाचार कान में पड़ते ही रानी पत्थर की तरह खड़ी रह गई। तब राजा डर गया कि कहीं वह बेटियों के साथ साथ रानी को भी न गँवा बैठे। उसने सिर पीटते हुए कहा—'जिस तरह मैंने तीन साल तक हठपूर्वक उन्हें सुरंग-महल से बाहर नहीं आने दिया था उसी तरह और एक दिन उन्हें उसी में रखता तो क्या बिगड़ जाता? तब तो यह संकट न आता। मैं कितना पापी हूँ कि अपनी लाड़ली बेटियों को गीधों के हवाले कर चुपचाप खड़ा देखता रहा? हाय! अब क्या रानी भी नहीं बचेगी?'

सारे महल में मातम छा गया। जब घंटों बीत जाने पर भी रानी को होश न आया तो सब उसके जीने की आशा छोड़ बैठे। इतने में राज-वैद्य वहाँ आया। उसने तरह तरह की दवाइयाँ दीं। आखिर किसी तरह रानी को होश आया। तब सबके चेहरों पर फिर आनंद झलकने लगा। लेकिन उनका आनंद ज़्यादा देर तक न रह सका। क्योंकि रानी को होश तो आया; लेकिन शोक के आघात से उसका दिमाग बिगड़ गया। 'मेरी

लड़कियाँ कहाँ हैं? बताओ, तुम सबने उन्हें कहाँ छिपा रखा है?' यों पगली की तरह वह कुछ का कुछ बकने लगी। 'क्या तुम समझती हो कि मैं अब भी तुमसे कुछ छिपा रहा हूँ? मेरी बात पर भरोसा करो। मैंने लड़कियों को कहीं नहीं छिपाया है। उन्हें गीध उठा ले गए हैं। अगर तुम्हें अब भी मेरी बात पर विश्वास नहीं होता है तो पूछ लो इन सब नौकरों से!' राजा ने दीनता के साथ कहा। लेकिन रानी की हालत ऐसी न थी कि वह उसकी बातें सुनती या समझती। 'तुम सब एक हो। तुम पर भरोसा नहीं करूँगी। मैं अपनी लड़कियों को आप ही खोज लाऊँगी। जाओ मेरे सामने से! मुझे जाने दो!' यह कह कर रानी उठने की कोशिश करने लगी। एक तो खुद शोक में डूबा हुआ था, दूसरे उसके सिर पर आफत का यह पहाड़ टूट पड़ा। राजा को कुछ न सूझा। उसने करुण-भाव से राज-वैद्य की ओर देखा जैसे कहता हो कि क्या आप मेरी कुछ मदद नहीं कर सकते? राज-वैद्य ने सोच-विचार कर और एक दवा दी जिससे रानी की बकवास बंद हो गई और वह उदास मन से चुपचाप पड़ी रही। तब राज-वैद्य ने राजा को एकांत में ले जाकर कहा—'महाराज! अब रानी जी की देह में कोई बीमारी नहीं है। सारी बीमारी तो उनके मन में है। इसका एक ही इलाज है। वह है लड़कियों को खोज-ढूँढ़ कर ले आना। यह काम जितनी जल्दी होगा उतनी ही जल्दी रानी चंगी हो जाएँगी। इसलिए आप बाकी सब काम छोड़ कर पहले लड़कियों की खोज करवाइए! आप इस बारे में जो करना हो

कीजिए। बाकी बातें मैं देख लूँगा।' उसने राजा को ढाढ़स बँधाते हुए कहा। 'अच्छा! मैं इस विषय में कोई कसर न होने दूँगा। अभी जाकर सारे राज में ढिंढोरा पिटवाता हूँ। आप रानी की देख-भाल कीजिए।' यह कह कर राजा चला गया। राजा ने तुरन्त अपने सब सिपाहियों को राज में चारों ओर ढूँढ़ने के लिए भेज दिया। साथ ही साथ उसने यह घोषणा कर दी कि जो उसकी लड़कियों को ढूँढ़ लाएगा उसे अपना आधा राज भी दे देगा।

धीरे धीरे हफ्ते-महीने बीत गए। लेकिन जो सिपाही लड़कियों को ढूँढ़ने गए थे उनमें से एक भी लौट कर न आया। कोई भी ऐसा वीर आगे न आया जो घोषणा के अनुसार आधा राज पाने के लिए राजकुमारियों की खोज में जाए। यह सब देख कर राजा भी बावला सा हो गया। उधर रानी की हालत में भी कोई सुधार न हुआ। एक दिन तड़के राजा अपने महल की तिमंजली छत पर टहल रहा था। इतने में धुँधली रोशनी में उसे दूर से तीन शकलें अपने महल

की ओर आती दिखाई दीं। वे तीन लड़के थे, जो लंबाई-चौड़ाई, शकल-सूरत में उतनी दूर से भी एक साँचे में ढले से जान पड़ते थे। उन्हें देख कर पहले तो राजा के मन में बड़ी आशा हुई। उसने सोचा, शायद वे उसकी लड़कियाँ ही हों। इसलिए राजा जल्दी जल्दी नीचे उतर कर उनकी तरफ़ दौड़ा। लेकिन नजदीक जाने पर उसे मालूम हुआ कि वे तो लड़के हैं। उसे बड़ी निराशा हुई। लेकिन उसे यह देख कर बड़ा आश्चर्य भी हुआ कि वे तीनों देखने में बिलकुल एक से लगते हैं। तब उसने सोचा—'कहीं मेरी लड़कियाँ ही दुष्ट-शक्तियों के प्रभाव से लड़के तो नहीं बन गईं?' वह उनकी तरफ गौर से देखने लगा। राजा के चेहरे पर आशा-निराशा की हलचलों को देख कर तीनों लड़के उसकी ओर देखते रह गए। आखिर राजा अपना कुतूहल न रोक सका। उसने पूछा—'लड़को! तुम कौन हो? किस गाँव के हो? इस तरह क्यों आए हो?' वे लड़के यह जान न पाए कि उनसे ये सब प्रश्न करने वाला खुद उस देश का राजा ही है। क्योंकि राजा अपनी पोशाक में न था। तिस पर उसके चेहरे पर हवाइयाँ भी उड़ रही थीं। वह राजा होने पर भी उस क्षण देखने में एक मामूली आदमी सा लग रहा था। खैर, राजा हो या रंक! उन्हें उसके सवाल का जवाब तो देना ही था। इसलिए लड़कों ने कहा—'हम यहाँ से दक्षिण की ओर भद्रपुर के रहने वाले हैं। इस देश के राजा

की घोषणा सुन कर यहाँ आए हैं।' 'ओह, ऐसी बात है! अच्छा तो चलो! मैं तुम्हें राजा के यहाँ ले चलता हूँ। मुझे भी वहाँ कुछ काम है।' यह कह कर राजा अपने साथ उन्हें महल की तरफ ले चला। महल में उसने तीनों को तीन आसनों पर बिठलाया और खुद जाकर सिंहासन पर बैठा। 'हाँ! अब बताओ! लड़को! राजा से तुम्हारा क्या काम है?' यह पूछते हुए उसने मुकुट अपने सिर पर पहन लिया। यह देख कर उन लड़कों में से एक ने आश्चर्य के साथ उठ कर राजा को नमस्कार किया और कहा—'अच्छा, तो आप ही राजा हैं?' तब बाकी दोनों ने भी उठ कर राजा को नमस्कार किया। 'हाँ, लड़को! तुम जिस अभागे राजा को देखने आए हो, वह मैं ही हूँ। तुम मुझे पहचान नहीं पाए तो इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। आजकल मेरी हालत ही ऐसी हो गई है। हाँ, अब तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओ!' राजा ने पूछा। तब उनमें से एक ने कहना शुरू किया—'महाराज! हम तीनों भद्रपुर की रहने वाली एक गरीबन के लड़के हैं। मेरा नाम उजेरा है। इसका नाम अँधेरा है। उसका नाम साँझ है।' यह कह कर उसने बाकी दोनों की ओर दिखाया। यह सुन कर राजा को अचरज भी हुआ और हँसी भी आई। उसने कहा—'क्या? अँधेरा, उजेरा और साँझ? बड़े विचित्र नाम हैं! क्या ऐसे नाम रखने की कोई खास वजह है?' तब उजेरा ने कहा—'हुजूर! हम तीनों अपनी माता की कोख से एक ही दिन कुछ घंटों के अंतर में पैदा हुए। पहला साँझ को पैदा हुआ। दूसरा आधी रात को। मैं
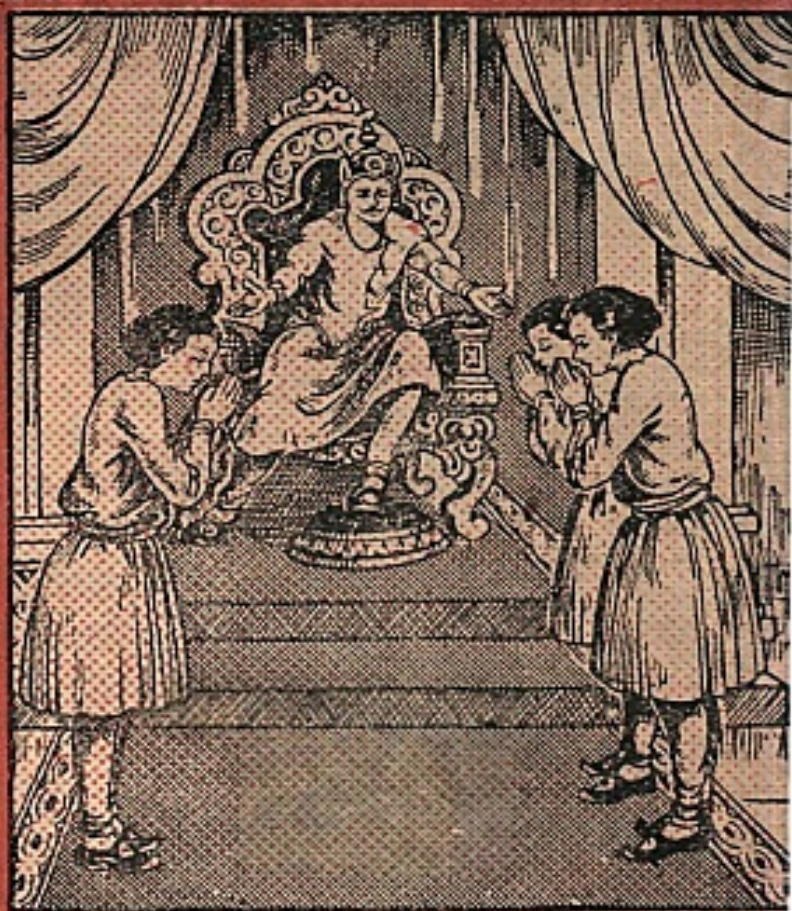
सबेरे। हम तीनों की सूरत-शकल भी एक सी देख कर माँ ने सोचा कि क्या नाम रखे जाएँ? आखिर उसने सोच कर हम जिस जिस वेला में पैदा हुए वैसे वैसे नाम रख दिए।' यह सुन कर राजा ने कहा— 'वाह! यह अच्छी रही! तो तुम तीनों जुड़वें बच्चे हो! कैसा गजब है? मेरी लड़कियाँ भी जुडवीं हैं। इस तरह जुडवों को खोजने के लिए जुडवों के आने में भगवान का हाथ मालूम होता है।' यह कह कर उसने लड़कों को अपनी बगल में बिठा कर पूछा— 'तो तुम घर से निकलते वक्त माँ से कह आए थे?' 'कहा क्यों नहीं? हम तो अपनी माँ से कहे बिना कोई काम नहीं करते। उनकी इजाजत के बाद ही हम घर से निकले। अब शायद आप पूछेंगे कि घर पर बूढ़ी माँ को अकेली छोड़ कर तीनों कैसे चले आए? इसका एक कारण है। सुनिए— हम लोग न जाने किस मुहूर्त में जनमे थे कि हममें कुछ अजीब कमजोरियाँ हैं। साँझ को ज्यादा रोशनी या घने अँधेरे में साफ़ नहीं दिखाई पड़ता। यह साँझ के वक्त जब तक रात गहरी नहीं हो जाती, तब तक ही देख सकता है। इसके पहले या इसके बाद वह अंधा हो जाता है। अब अँधेरा की बात लीजिए— वह रोशनी बिलकुल नहीं सह सकता। इसलिए रातों में ही उसे ज्यादा आराम रहता है। अब मेरे लिए तीखी रोशनी ही चाहिए। तड़के मैं बाहर नहीं निकलता। साँझ होने के पहले ही घर पहुँच जाता हूँ। इन कमजोरियों के कारण हम तीनों एक दूसरे से बिछुड़ते नहीं। इसके अलावा हम जानते हैं कि राजकुमारियों को ढूँढ़ लाना आसान काम

नहीं है। यह काम हम में से कोई अकेले नहीं कर सकता। लेकिन चौबीस घंटों को तीन हिस्सों में बाँट कर तीनों जून में हम अपना अपना काम अच्छी तरह कर सकते हैं। ऐसा हमने कई बार किया है। अब इन राजकुमारियों को ढूँढ़ लाने के काम में भी अगर हम तीनों मिल कर काम करेंगे तो जरूर सफल होने की आशा है। ऐसा करने पर यह काम हमारे लिए ज्यादा मुश्किल न होगा। यह सोच कर अपनी माँ को अकेली छोड़ कर भी हम तीनों साथ ही यहाँ आए हैं।' यों कह कर उसने अपना पूरा हाल सुना दिया। तब राजा ने कहा—'ठीक है। तुम्हारा कहना बेसबब नहीं है। मैं अभी तुम्हारी माँ को यहाँ बुलवा भेजता हूँ। फिर तुम्हें कोई फिक्र न रहेगी। वह भी हमारे साथ महल में रहेगी।' 'इससे बढ़ कर और क्या होगा?' उन तीनों ने एक स्वर में कहा। राजा ने तुरंत अपने नौकरों को भेज कर उनकी माता को बुलवा भेजा। राजा की उदारता देख कर वह भी बहुत खुश हुई। राजा ने उस बुढ़िया से कहा—'माँ! आज तुम्हारे लड़कों के जरिए तुम्हारा सारा हाल मालूम हुआ। इन साहसी पुत्रों को जन्म देकर तुम्हारी कोख भी पावन हो गई।' राजा ने उसके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। फिर राजा ने लड़कों की माँ की इजाजत लेकर उनके नाम में थोड़ा सा अदल-बदल किया। तब उनके नाम क्रम से प्रदोष, निशीथ और उदय हो गए। इससे माँ और लड़कों दोनों को खुशी हुई। दूसरे दिन राजा ने लड़कों को तरह तरह के हथियार दिलवाये। फिर वह उन्हें अपने अस्तबल में ले गया और अपने अपने घोड़े चुन लेने को

कहा। अपने नाम के अनुसार ही उदय ने एक ऐसा सफेद घोड़ा लिया जो सूरज की रोशनी की तरह स्वच्छ तेज से दमक रहा था। निशीथ का घोड़ा आबनूस के कुंदे की तरह चमक रहा था। प्रदोष का घोड़ा साँझ की रोशनी की तरह लाल था। एक शुभ मुहूर्त में उदय अपने सफेद घोड़े पर, निशीथ अपने काले घोड़े पर और प्रदोष अपने लाल घोड़े पर सवार होकर खोई हुई लड़कियों की खोज में चले पड़े। उनके चलने के पहले राजा ने तीन काले झंडे लाकर तीनों के घोड़ों की कलंगियों पर खोंस दिए और कहा—'जब तुम तीनों मेरी लड़कियों को लेकर लौटोगे तो इन झंडियों को जरूर उतार कर फेंक देना। भूलना नहीं!' उसने उन्हें हिदायत कर दी। उसके बाद राजा और अपनी माँ का हार्दिक आशीर्वाद पाकर तीनों कुमार वायु-वेग से चल पड़े।

[निशीथ और प्रदोष, जिनको दिन की रोशनी में दिखाई नहीं देता था, उदय के साथ कैसे जा सके? उनकी कोशिशें कहाँ तक सफल हुईं? आदि बातें अगले अंक में पढ़िए।]

पाप का बोझा

साकेतपुर नाम के गाँव में सरसी नाम की एक बेवा औरत रहती थी। बेचारी का पति बहुत दिन पहले ही मर गया था। इसलिए वह अनाथ होकर जिंदगी काट रही थी। उसका पति उसके लिए एक घर और पिछवाडे में एक बाड़ी छोड़ गया था। यही उसकी कुल जायदाद थी। वह अनाथ औरत उस बाड़ी में कुछ न कुछ पैदा करके अपनी गुजर कर लेती थी। किसी तरह उसके दिन कट जाते थे। एक बार सरसी के नातेदारों के घर में किसी लड़की की शादी थी। उन्होंने उसे दस दिन पहले ही लिखा कि तुरंत आओ और शादी के काम-धाम में जरा मदद करो। रिश्ते-नाते का मामला था। कैसे इनकार करती? सरसी ने खत देखते ही घर में ताला लगा दिया और पड़ोसिनों से कहा—'अजी! जरा देख-भाल करती रहना। मैं दस दिन में लौट आऊँगी।' इस तरह घर की रखवाली का काम उन्हें सौंप कर वह बड़े उत्साह से नातेदारों के घर चली गई। वहाँ जाते ही सारा काम उसके सिर पर आ पड़ा। दस दिन में शादी हो गई। मेहमान भी सब जहाँ के तहाँ चले गए। सरसी का काम भी पूरा हो गया था। इसलिए उसने अपने आँचल की गाँठ से चार रुपए निकाल कर वधू के हाथ में रख दिए और आशीर्वाद देकर सब से विदा ली और अपने गाँव लौट आई। वहाँ आकर उसने घर का ताला खोला। सब चीजें जहाँ की तहाँ पड़ी हुई थीं। लेकिन जब उसने बाड़ी में जाकर देखा तो उसके पैरों तले से धरती खिसक गई। बात यह थी कि वह मेड़ जो उसकी बाडी को पिछवाड़े में पड़ोस के एक घर की बाड़ी से अलग करती थी, वैसे ही बीस गज अंदर खिसक आई थी। 'यह कैसा गजब है?' सरसी ने सोचा और पड़ोसिनों

विपिन कुमार

को बुला कर दिखाया। 'अब हम क्या कहें तुमसे? जब तुम गाँव में नहीं थीं उस समय पटवारी जी ने तुम्हारी बाड़ी की बीस गज जमीन अपनी बाड़ी में मिला ली। उन्होंने पुरानी मेंड़ कटवा दी और उसके बदले नई मेंड़ बीस गज खिसका कर बनाई। बड़े लोग जो न करें सो थोड़ा! अब पटवारी जी से कौन लड़ने जाय?' उन्होंने सच्ची बात बता दी। 'और तुम सब खड़ी खड़ी देखती रहीं?' सरसी ने पूछा। 'हाय! हम क्या कर सकती हैं? गाँव में किसकी मजाल है जो पटवारी के सामने सर उठाए? जल में रह कर मगर से वैर?' उन्होंने जवाब दिया।

सरसी ने सीधे पटवारी की स्त्री के पास जाकर अपना दुखड़ा रोया। लेकिन उसने कहा—'मैं मरदों के काम में दखल नहीं डाल सकती।' इस तरह उसने जल्दी ही पिंड छुड़ा लिया। तब सरसी ने गाँव के एक अमीर आदमी से जाकर कहा। उसने सारी बात सुन कर कहा—'पटवारी बड़ा जालिम है। लेकिन क्या किया जाय? उसके बिना हमारा काम एक दिन भी नहीं चल सकता।' इस तरह उसने भी अपनी बला टाली। तब सरसी को निश्चय हो गया कि गाँव वालों में कोई उसकी मदद नहीं करेगा। उसने रिश्तेदारों को खत लिखे। लेकिन उन्होंने जवाब में लिखा—'जो काम गाँव वालों से नहीं हो सका, वह हम लोग आकर क्या कर सकते हैं? इसलिए तुम किसी न किसी तरह गाँव वालों को ही राजी करो।' तब सरसी ने सोचा कि अपनी गरज पड़ने पर सब लोग खुशामद करके काम निकाल लेते हैं। लेकिन जरूरत पड़ने पर कोई मदद करने वाला नहीं। यह सोच कर वह चुप्पी साध गई। इतने में बरसात के दिन आ गए। पटवारी ने अपनी बाड़ी में और जबर्दस्ती छीनी हुई सरसी की जमीन में

नारियल लगाने का इरादा करके गढ़े खुदवा रखे। एक दिन जब वह उन गढ़ों को देखने बाहर निकला तो उसी समय सरसी भी एक बोरा लेकर अपनी बाड़ी में आई। उसने नई बनाई हुई मेंड़ के पास आकर पुकारा—'पटवारी जी!' पटवारी जी उसके मुँह से अपना नाम सुनते ही चौंक पड़े। वे मन ही मन डरने लगे कि अब न जाने यह क्या क्या कोसने और गाली-गलौज करने लगे। क्योंकि उन्होंने उसकी ज़मीन अपनी बाड़ी में मिला ली थी। लेकिन जब उन्होंने देखा कि सरसी बिलकुल गुस्से में नहीं है तो उन्हें दिलासा हुआ। सरसी ने उन्हें कहा-सुना कुछ भी नहीं। उसने सिर्फ इतना कहा—'क्यारियों में डालने के लिए मुझे एक बोरा मिट्टी चाहिए। क्या मैं उस ढेर में ले लूँ?' तब पटवारी ने सोचा—'मैंने इसकी बीस गज ज़मीन हड़प ली है। फिर इसे एक बोरा भर मिट्टी देने में क्या हर्ज है? बेचारी ने मिट्टी ही तो माँगी है? इसने ज़मीन के बारे में तो बखेड़ा उठाया ही नहीं। पहले मुझे तो बड़ा डर लगता था।' यह सोच कर उन्होंने कहा—'ले लो, जितनी मिट्टी चाहो ले लो! मिट्टी में क्या रखा है? अरे! इसके लिए भी पूछने की जरूरत है?' तब सरसी ने पटवारी की बाड़ी में आकर बोरे में मिट्टी भर ली और कहा—'पटवारी जी! मैं अकेली इसे नहीं उठा सकती। जरा आप इसे उठा कर मेरे सिर पर रख देंगे?' यह सुन कर पहले तो पटवारी को बड़ा गुस्सा आया। 'मैं पटवारी हूँ। क्या तूने मुझे अपना नौकर समझ रखा है?' उसने कहना चाहा। लेकिन फिर तुरंत सोचा—'बेबा औरत है। जरा उठा ही दूँ तो क्या हर्ज है? तिस पर इसको शाँत रखने में ही मेरी कुशल है। इससे नाहक झगड़ा करना ठीक नहीं।' यह सोच कर वे बोरा उठाने के

नारियल लगाने का इरादा करके गढ़े खुदवा रखे। एक दिन जब वह उन गढ़ों को देखने बाहर निकला तो उसी समय सरसी भी एक बोरा लेकर अपनी बाड़ी में आई। उसने नई बनाई हुई मेंड़ के पास आकर पुकारा—'पटवारी जी!' पटवारी जी उसके मुँह से अपना नाम सुनते ही चौंक पड़े। वे मन ही मन डरने लगे कि अब न जाने यह क्या क्या कोसने और गाली-गलौज करने लगे। क्योंकि उन्होंने उसकी जमीन अपनी बाड़ी में मिला ली थी। लेकिन जब उन्होंने देखा कि सरसी बिलकुल गुस्से में नहीं है तो उन्हें दिलासा हुआ। सरसी ने उन्हें कहा-सुना कुछ भी नहीं। उसने सिर्फ इतना कहा—'क्यारियों में डालने के लिए मुझे एक बोरा मिट्टी चाहिए। क्या मैं उस ढेर में ले लूँ?' तब पटवारी ने सोचा—'मैंने इसकी बीस गज जमीन हड़प ली है। फिर इसे एक बोरा भर मिट्टी देने में क्या हर्ज है? बेचारी ने मिट्टी ही तो माँगी है? इसने जमीन के बारे में तो बखेड़ा उठाया ही नहीं। पहले मुझे तो बड़ा डर लगता था।' यह सोच कर उन्होंने कहा—'ले लो, जितनी मिट्टी चाहो ले लो! मिट्टी में क्या रखा है? अरे!

इसके लिए भी पूछने की जरूरत है?' तब सरसी ने पटवारी की बाड़ी में आकर बोरे में मिट्टी भर ली और कहा—'पटवारी जी! मैं अकेली इसे नहीं उठा सकती। जरा आप इसे उठा कर मेरे सिर पर रख देंगे?' यह सुन कर पहले तो पटवारी को बड़ा गुस्सा आया। 'मैं पटवारी हूँ। क्या तूने मुझे अपना नौकर समझ रखा है?' उसने कहना चाहा। लेकिन फिर तुरंत सोचा—'बेबस औरत है। जरा उठा ही दूँ तो क्या हर्ज है? तिस पर इसको शाँत रखने में ही मेरी कुशल है। इससे नाहक झगड़ा करना ठीक नहीं।' यह सोच कर वे बोरा उठाने के

लिए तैयार हो गए। तैयार तो वे हो गए; लेकिन वह बोरा उनके उठाए न उठा। उनके मोटे-ताजे बदन में मट्टी का बोरा उठाने की ताकत न थी। 'मैं अकेले यह बोरा उठा नहीं सकता। जाकर किसी और को बुला लाओ!' उन्होंने थोड़ा झुँझला कर कहा। तुरंत सरसी बाहर गई और आस-पड़ोस के रहने वालों को बुला लाई। वे लोग सोचने लगे कि माजरा क्या है? तब उसने कहना शुरू किया—'लोगो! सुनो कान खोल कर! जब मैंने पटवारी जी से कहा कि जरा मिट्टी का बोरा उठा कर मेरे सिर पर रख दीजिए तो इन्होंने कहा—'यह काम अकेले मुझसे नहीं हो सकता! किसी और को बुला लाओ!' जो बेचारा एक बोरा मिट्टी नहीं उठा सकता, वह बीस गज जमीन की मिट्टी हड़प लेने के पाप का बोझ कैसे उठा सकेगा? कल जब यमदूत आकर पूछेगा तो ये क्या जवाब देंगे? जरा तुम्हीं सब पूछ लो इन भले आदमी से!'

विधवा की ये बातें सुनते ही पटवारी तिलमिला उठा। एक पल भी वहाँ न रह सका। सिर झुका कर चला गया। आश्चर्य! दूसरे दिन वह मेंड़ फिर अपनी पुरानी जगह पर चली गई। सरसी की बाड़ी में बिना खर्च के खुदाई भी हो गई थी। उसने पटवारी द्वारा खुदवाए हुए गढ़ों में नारियल के पेड़ लगा दिए। पटवारी ने फिर कभी उसको कोई तकलीफ न दी। शान्ति से और समझ-बूझ कर काम करने का फल कितना अच्छा होता है! अगर वह विधवा औरत गुस्से में आ जाती और गाली-गलौज करने लगती तो जमीन तो खो ही चुकी थी! सारी जिन्दगी के लिए काँटा बो लेती। पटवारी उसे कभी सुख की नींद सोने नहीं देता। इससे हमें यह उपदेश मिलता है कि संकट आने पर कभी घबराना नहीं चाहिए। बल्कि धीरज तथा समझदारी से काम लेना चाहिए।

लिए तैयार हो गए। तैयार तो वे हो गए; लेकिन वह बोरा उनके उठाए न उठा। उनके मोटे-ताजे बदन में मट्टी का बोरा उठाने की ताकत न थी। 'मैं अकेले यह बोरा उठा नहीं सकता। जाकर किसी और को बुला लाओ!' उन्होंने थोड़ा झुँझला कर कहा। तुरंत सरसी बाहर गई और आस-पड़ोस के रहने वालों को बुला लाई। वे लोग सोचने लगे कि माजरा क्या है? तब उसने कहना शुरू किया—'लोगो! सुनो कान खोल कर! जब मैंने पटवारी जी से कहा कि जरा मिट्टी का बोरा उठा कर मेरे सिर पर रख दीजिए तो इन्होंने कहा—'यह काम अकेले मुझसे नहीं हो सकता! किसी और को बुला लाओ!' जो बेचारा एक बोरा मिट्टी नहीं उठा सकता, वह बीस गज जमीन की मिट्टी हड़प लेने के पाप का बोझ कैसे उठा सकेगा? कल जब यमदूत आकर पूछेगा तो ये क्या जवाब देंगे? जरा तुम्हीं सब पूछ लो इन भले आदमी से!'

विधवा की ये बातें सुनते ही पटवारी तिलमिला उठा। एक पल भी वहाँ न रह सका। सिर झुका कर चला गया। आश्चर्य! दूसरे दिन वह मेंड़ फिर अपनी पुरानी जगह पर चली गई। सरसी की बाड़ी में बिना खर्च के खुदाई भी हो गई थी। उसने पटवारी द्वारा खुदवाए हुए गढ़ों में नारियल के पेड़ लगा दिए। पटवारी ने फिर कभी उसको कोई तकलीफ न दी। शान्ति से और समझ-बूझ कर काम करने का फल कितना अच्छा होता है! अगर वह विधवा औरत गुस्से में आ जाती और गाली-गलौज करने लगती तो जमीन तो खो ही चुकी थी! सारी जिन्दगी के लिए काँटा बो लेती। पटवारी उसे कभी सुख की नींद सोने नहीं देता। इससे हमें यह उपदेश मिलता है कि संकट आने पर कभी घबराना नहीं चाहिए। बल्कि धीरज तथा समझदारी से काम लेना चाहिए।

शांबरी नगर में चतुर नाम का एक मूर्तिकार रहता था। मूर्तिकार माने मूर्तियाँ बनाने वाला। चतुर की बनाई हुई मूर्तियाँ देखने से ऐसा मालूम होता था मानों वे अब बोलीं! अब बोलीं! उनकी आँखें देख रही हैं! उनका दिल धड़क रहा है! कभी कभी वह मूर्तियों के अंदर कलपुर्जे भी रख देता था जिसके बल से वे मूर्तियाँ उठने-बैठने और हाथ-पैर हिलाने-डुलाने लग जाती थीं। कुछ लोग यह देख कर भ्रम में पड़ जाते और उनसे बातें भी करने लगते थे। अमीर लोग उससे सिपाहियों की मूर्तियाँ बनवा कर अपने महलों के सामने रखवाली करने के लिए रख देते थे। जब कभी चोर घर में आते और उन सिपाहियों को देखते तो सचमुच ही डर कर भाग जाते थे। ऐसी करामात थी चतुर की कारीगरी में। इस तरह की अजीब मूर्तियों का दाम बहुत मिल सकता था। चतुर चाहता तो कुछ ही दिनों में माला-माल बन जाता। लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। वजह यह थी कि चतुर बड़ा खुशामद-पसंद आदमी था। अपनी तारीफ सुन कर वह फूला न समाता था। जब लोग आकर उसकी कारीगरी की बड़ाई करने लगते तो वह ऐसा खुश होता कि उन्हें मुफ्त में ही वे मूर्तियाँ दे देता था। कुछ दिन बाद लोग उसकी कमजोरी जान गए। अब किसी का मन किसी मूर्ति पर चल जाता तो झट वह उस का गुण-गान करने लग जाता था। सुनते ही चतुर फूल कर कुप्पा हो जाता और वह उसे दे देता था।

उसी शहर में दीर्घदर्शी नाम का एक ज्योतिषी रहता था। लोग कहा करते थे कि उसके मुँह से जो बात निकलती, कभी झूठी नहीं होती। एक बार चतुर भी उसके पास गया और अपनी जन्म-कुंडली दिखाई। दीर्घदर्शी

ने उसकी जन्म-कुंडली ध्यान से देखी और भौंहें सिकोड़ लीं। 'पंडितजी! यों क्या देख रहे हैं? क्या बात है? कुछ बताइए न?' चतुर ने पूछा। 'पीछे बताऊँगा।' यह कह कर ज्योतिषी जब जाने लगा तो चतुर बहुत घबरा गया। उसकी समझ में न आया कि बात क्या है? चिंता के मारे उसने खाना-पीना छोड़ दिया। एक दिन उसके एक मित्र ने ज्योतिषी के पास जाकर कहा—'पंडितजी! चतुर चिंता के मारे दिन दिन घुलता जा रहा है। अगर उसके ऊपर कोई संकट आने वाला हो तो बता दीजिए न! जिससे कुछ उपाय किया जा सके।' तब ज्योतिषी ने कहा—'ऐ पगले! उस पर बड़ा भारी संकट आने वाला है। अगली नवमी की रात को एक बज कर सात मिनट पर उसे सावधान रहने को कहो।'

'तो पंडित जी! ग्रहों की शाँति, अभिषेक, दान वगैरह करने से क्या कुछ फायदा न होगा? क्या यह संकट नहीं टलेगा?' उस आदमी ने पंडितजी से फिर पूछा। तब ज्योतिषी ने कहा—'क्या संसार में कोई ऐसा वीर है जो मौत को टाल सकता है? समुंदर के बीचों-बीच एक ही खंभे वाला महल बना कर उसमें रहने पर भी परीक्षित महाराज को उसने साँप बन कर डस लिया। फिर मामूली आदमी की बिसात ही क्या है?' यह कह कर उसने उसे वहाँ से भेज दिया। उस मित्र ने जाकर चतुर से सारा हाल सुनाया और कहा—'अब तुम शास्त्र-पुराण पढ़ कर परलोक की चिंता करो! लो, इसीलिए मैं तुम्हारे वास्ते रामायण लाया हूँ।' यह कह कर उसे वह रामायण देकर चला गया। उसके जाने के बाद चतुर ने अपनी मौत के बारे में सोचना शुरू किया। उसे बड़ा शोक हुआ। इसी तरह रोते रोते वह सो गया। जब जागा तो उसे एक उपाय सूझ गया।

वह तुरंत बाजार गया और मूर्तियाँ बनाने के लिए आवश्यक वस्तुएँ बहुत सी खरीद लाया। फिर घर में आकर उसने सब दरवाजे बंद कर लिए और एक आइने के सामने बैठ कर अपना काम शुरू किया। आइने में अपनी परछाईं देख कर उसने ठीक अपने ही जैसी चार मूर्तिआँ बनाईं। उन के अंदर उसने कल-पुर्जे रखे जिससे वे मूर्तियाँ ठीक उसी की तरह हिलने-डुलने, देखने-सुनने, और चलने-फिरने लगीं। यहाँ तक कि उसने उन मूर्तियों को इस तरह बनाया कि उन्हें कोई नजदीक से देखने पर भी बिलकुल न पहचान सके। ऐसा मालूम होता था कि वे सभी जीती-जागती हैं। फिर वह निश्चिंत होकर बैठ गया। नवमी देखते देखते आ गई। लेकिन चतुर को अब मौत का डर बिलकुल न था। उस दिन रात होते ही उसने पाँच बिस्तर बिछवाए। बीच वाले बिस्तर पर वह खुद लेट रहा और अपने अगल-बगल दो दो मूर्तियों को लिटा दिया। फिर वह चादर ओढ़ कर देखने लगा कि अब क्या होने वाला है? इतने में घड़ी में ग्यारह बज गए। धीरे धीरे बारह भी। आखिर एक भी बज गया। ठीक उसी समय दो यमदूत उस कमरे में घुस आए। आते ही पाँच खाटों पर लेटी हुई पाँचों सूरतों पर उनकी नजर पड़ी। लेकिन वे पहचान न सके कि उनमें चतुर कौन है! इस तरह जब दो तीन मिनट बीत गए तो उनमें से एक को अच्छा उपाय सूझ गया। वह मूर्तियों के पास जाकर एक एक को चिकोटी लेने लगा। उसके साथी ने पूछा कि 'क्या बात है? तुम क्यों ऐसा कर रहे हो?' तब उसने कहा—'कुछ नहीं। चिकोटी काटने से पता चल जाएगा कि कौन हमारा आसामी है। क्योंकि इनमें से जो आदमी होगा उसे दरद होगा और वह चिल्ला उठेगा। अगर नहीं तो थोड़ा सा
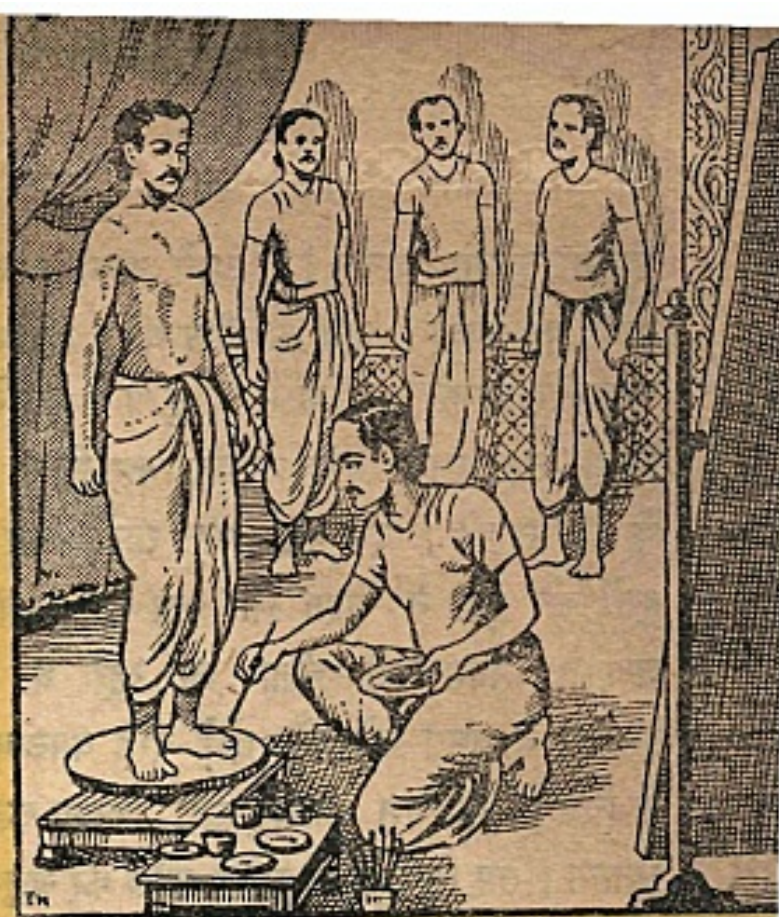
हिलेगा-डुलेगा जरूर !' उसने अपनी चाल साथी को बताई। बात तो ठीक थी। लेकिन चतुर पर इसका कुछ असर न हुआ। उसने किसी तरह सारा दरद बर्दाश्त कर लिया। चूँ तक न की। दम साधे पड़ा रहा। यम-दूतों को कुछ न सूझा कि अब क्या किया जाए ? समय भी बीता जा रहा था। इसलिए वे घबरा उठे और दौड़े दौड़े यमलोक में चित्रगुप्त के पास जाकर सारा किस्सा कह सुनाया। तब चित्रगुप्त ने खाता खोल कर चतुर का जीवन-वृत्तांत देखा। उसमें लिखा था कि वह बड़ा खुशामद-पसंद है। प्रशंसा सुन कर फूल जाता है। 'तुम लोग उसकी खूब तारीफ करो। फिर देखना वह पकड़ा जाता है कि नहीं ?' चित्रगुप्त ने यमदूतों को सलाह दी और भेज दिया। यमदूतों ने फिर चतुर के कमरे में घुस कर जोर से आपस में बातें करना शुरू कर दिया, जिससे उसे भी सुनाई पड़े—'ओह ! यह चतुर कैसा कुशल कला-कार है ? उसने चारों मूर्तियाँ ऐसी बनाई कि किसी में जरा भी फरक नहीं मालूम पड़ता है। हमारा ख्याल था कि सिर्फ विश्वामित्र ने ही ब्रह्मा से होड़ लगाई और एक नई सृष्टि रच डाली। लेकिन यह चतुर तो उससे भी बढ़ गया। चतुर सचमुच बहुत चतुर है !' यह कह कर वे उसकी प्रशंसा का पुल बाँधने लगे। उनके मुँह से अपनी ऐसी प्रशंसा सुन कर चतुर की खुशी का ठिकाना न रहा। यहाँ तक कि वह ज्यादा देर तक अपनी खुशी को छिपाने में समर्थ न हो सका। आनंद से उसका चेहरा चमकने लगा और वह मौत की बात भूल गया। उसके होठों पर मुसकुराहट खेलने लगी। 'लो पकड़ा गया चोर !' कह कर यम-दूतों ने उछल कर उसके गले में अपना पाश लगा दिया। चतुर की कलात्मक मूर्तियाँ देखती रह गईं। वे क्या करतीं ? आखिर चतुर की कमजोरी उसे ले ही डूबी।

जगन्नाथ-क्षेत्र के नजदीक ही कुंडबिल्व नाम का एक गाँव था। उस गाँव में एक छोटा सा ग़रीब परिवार रहता था। दो ही व्यक्ति थे। नारायण भट्ट और कमला बाई। भगवान की कृपा से उनके एक लड़का हुआ। उसका नाम जयदेव रखा गया। दोनों उसे प्रेम से पालने लगे। जयदेव बचपन से ही भगवान की बड़ी भक्ति करता था। धीरे धीरे वह बड़ा हुआ और नामी पंडित हो गया। उसने गीत-गोविंद नाम का एक रस-पूर्ण काव्य लिखा। इस काव्य के कारण जयदेव की ख्याति देश में चारों ओर फैल गई। उसके गीत चारों ओर बड़े प्रेम से गाए जाने लगे। दूर दूर से लोग जयदेव के दर्शन करने और उसके मुख से गीत-गोविंद के पद सुनने के लिए आते थे। धीरे धीरे जयदेव का वह गाँव एक महातीर्थ बन गया। उस गाँव में जाने के लिए जगन्नाथ पुरी होकर ही जाना पड़ता था। उन दिनों उस प्रदेश का राजा था सात्यकि। उस राजा ने जयदेव से ईर्ष्या करके उसकी होड़ में एक दूसरा गीत-गोविंद लिखा। लेकिन राजा के गीत-गोविंद को पढ़ने वाला कोई न था। इसलिए उसने अपने राज में घोषणा करा दी कि कोई भी जयदेव का गीत-गोविंद न पढ़े। सब लोग उसी का गीत-गोविंद पढ़ें। इस तरह उसने जबर्दस्ती अपनी किताब लोगों के ऊपर लादनी चाही। लेकिन लोगों को तो राजा की वह किताब बिलकुल पसंद न थी। 'गीत-गोविंद तो जयदेव का ही पढ़ना चाहिए। अहा! उसमें कैसा रस है? राजा की किताब में क्या है? भूसा भरा हुआ है! उसे कौन पढ़ेगा? पढ़ने वालों को उसमें क्या आनंद मिलेगा?' लोग इस तरह आपस में काना-

करुण कुमार
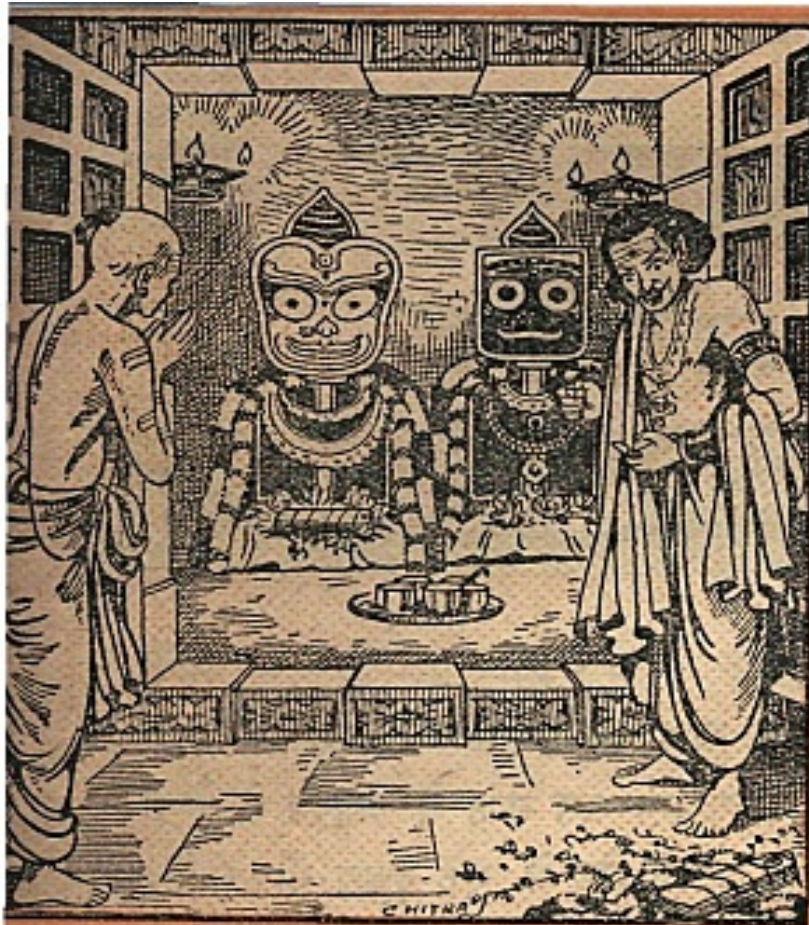
फूसी करते थे। यह सब देख-सुन कर राजा की ईर्ष्या और भी बढ़ गई। वह जल-भुन गया, जैसे कोई जले पर नमक छिड़क दे। अब कुंडबिल्व जाने वाले लोगों को भी उसने सताना शुरू किया। यह देख कर लोगों को उसके काव्य से घृणा होने लगी। जयदेव के गीत-गोविंद पर उनका प्रेम और भी बढ़ गया। आखिर राजा ने दोनों ग्रन्थों की परीक्षा करनी चाही। उसको अपनी विद्या का बड़ा गर्व था। उसने एक रात को अपनी किताब और जयदेव की किताब को भगवान जगन्नाथ के चरणों तले रखवा कर पट बंद करवा दिए। जब सवेरे लोगों ने आकर देखा तो जयदेव का गीत-गोविंद भगवान के पास पड़ा था और राजा की किताब गर्भ-गृह के बाहर धूल में लोट रही थी। राजा यह अपमान न सह सका। वह शोक और क्षोभ से पागल हो गया और भगवान जगन्नाथ को कोसने लगा। यह देख कर भगवान प्रत्यक्ष हुए और बोले—'राजा! मैं जानता हूँ कि तुम्हारी भक्ति कम नहीं है। लेकिन अहंकार अच्छा नहीं होता है। ईर्ष्या की आग बुरी होती है। तुम्हारे मन में जलन पैदा हो गई है। इसीलिए तुम्हारी किताब से और तुम से लोगों को घृणा हो गई है! लेकिन मैं तुम पर कृपा करना चाहता हूँ। जाओ, मैं तुम्हें ऐसा वर देता हूँ कि तुम्हारे गीत-गोविंद के चौबीस श्लोक पढ़ने के बाद ही जयदेव की किताब लोग पढ़ेंगे।' यह वर देकर भगवान अन्तर्धान हो गए। भगवान के वर के प्रभाव से अब राजा के गीत-गोविंद के चौबीस श्लोक जयदेव की किताब पढ़ने के पहले ही पढ़े जाने लगे। उस तरह उस राजा का जन्म धन्य हो गया।

सात्यकि के समय में ही जगन्नाथ में एक धनवान ब्राह्मण रहता था। उसके एक अत्यंत सुंदरी लड़की थी। उसका नाम था पद्मावती।

पद्म की सी सुंदर और बड़ी बड़ी आँखों वाली होने के कारण उस लड़की का नाम पद्मावती रखा गया। माँ-बाप ने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला। वह ब्राह्मण धनवान था। साथ ही वह भगवान कृष्ण का भारी भक्त भी था। जब उसकी लड़की पद्मा बड़ी हुई तो उसकी शादी का सवाल उठा। उस ब्राह्मण ने इसके बारे में खूब सोचा-विचारा और निश्चय किया कि 'पद्मा को मैं भगवान कृष्ण के चरणों में ही अर्पण करूँगा और किसी के साथ ब्याहूँगा नहीं।' पिता ने अपना यह निश्चय सब लोगों को बता दिया। बहुत से लोग पद्मा के रूप पर मुग्ध होकर ब्याह की लालसा से आए। लेकिन ब्राह्मण ने सबको निराश लौटा दिया। आखिर लोग खुल्लम-खुल्ला कहने लगे—'यह ब्राह्मण सचमुच पागल हो गया है। नहीं तो लड़की का ब्याह भगवान से करने की बात यह कैसे चलाता? क्या ऐसा भी कहीं हुआ है?' एक दिन भगवान कृष्ण उस ब्राह्मण के सपने में आए और कहने लगे—'हे ब्राह्मण! मैं तुम्हारी भक्ति-भावना को देख कर प्रसन्न हूँ। लेकिन तुम मेरी एक बात मानो! तुम अपनी लड़की का ब्याह मेरे परम भक्त जयदेव से कर दो। मेरी यही हार्दिक इच्छा है।' कह कर भगवान अदृश्य हो गए। यह स्वप्न होते ही ब्राह्मण का निश्चय बदल गया और उसने शीघ्र ही पद्मावती का ब्याह जयदेव के साथ कर दिया। पद्मा अपने पति को प्यार करती हुई सुख से रहने लगी।

जयदेव इस तरह आनंद से दिन बिता रहे थे कि एक दिन एक व्यापारी ने उनसे कहा—'भगवन! कृपा कर एक बार आप हमारे गाँव पधारिए और अपनी चरण-धूलि से हमारा गृह पावन कीजिए। हमें अपना उपदेशामृत पिला कर मुक्ति-पथ का दर्शन कराइए!' इस तरह अनेक प्रकार से

अनुनय-विनय करके वह व्यापारी जयदेव को अपने यहाँ ले गया। वहाँ उसने जयदेव की बहुत आव-भगत की। अनेक सेवा-सत्कार किए। जयदेव के उपदेशों से लोगों ने बहुत लाभ उठाया। इस तरह कुछ दिन बीत जाने पर जयदेव ने व्यापारी से कहा—'मैं अब घर जाऊँगा।' तब उस व्यापारी ने बहुत कुछ खर्च करके एक सुंदर रथ तैयार करवाया। उस रथ में उसने बहुत सा धन, तरह तरह के हीरे-जवाहर और अनेक प्रकार के उपहार रखवा दिए। फिर विश्वासी नौकरों को साथ कर दिया और चरण-रज ले कर उसने गुरुदेव को विदा किया। थोड़ी दूर जाने के बाद नौकर-चाकरों को, जो जयदेव की रक्षा के लिए साथ आए थे, कुचाल सूझी। उन्होंने आपस में सलाह की और एक निर्जन जगह में जयदेव को रथ से उतार कर उसके हाथ-पैर काट डाले। फिर उन्होंने माल-असबाब लूट कर जयदेव को एक कुएँ में डाल दिया और वहाँ से चंपत हो गए। कुँए में पानी न था। जयदेव उस कुँए में पड़े-पड़े भगवान का ध्यान करने लगे। भगवान जगन्नाथ के कानों में उसकी पुकार पड़ी और नए हाथ-पैर हो गए। उसी समय क्रौंचक नाम का राजा शिकार खेलने वहाँ आया। उसे कुएँ में से जयदेव की आवाज सुनाई दी। उसने झट कुएँ में झाँक कर देखा कि बात क्या है? उसमें आदमी को देखते ही तुरंत उसे बाहर निकलवाया और पूछ-ताछ की कि कुएँ में में वह कैसे जा गिरा। भक्त जयदेव नहीं चाहता था कि वह किसी को दंड दिलाए। इसलिए उसने कहा कि वैसे ही गिर गया था और इस तरह बात टाल दी। राजा क्रौंचक

जयदेव को अपने राज में ले गया। वह समझ गया था कि ये कोई बड़े ज्ञानी व्यक्ति हैं। उसने बड़ी श्रद्धा से उनको अपना गुरू मान लिया। यों कुछ दिन बीत गए। धीरे-धीरे राजा को मालूम हो गया कि जयदेव भगवान कृष्ण के महान भक्त हैं और भगवान की इन पर पूरी कृपा रहती है। उसने सोचा–'तब ये साक्षात् भगवान ही हैं। मेरे पुण्य-फल से ही इस रूप में मुझे मिल गए हैं।' इसलिए मन-ही-मन उसने निश्चय किया कि अब किसी भी तरह जयदेव को अपने राज से अन्यत्र नहीं जाने देना चाहिए। जयदेव की बातें वह बहुत गौर से सुनता था और उनके उपदेशों के अनुसार चलने की कोशिश करता था। कुछ दिन बाद जयदेव ने अपनी पत्नी पद्मावती को भी अपने पास बुला लिया। उस राज में वे दोनों बड़े सुख से रहने लगे। एक दिन एक ऐसी घटना घटी जिससे पद्मावती की कड़ी परीक्षा हो गई। रणवास में पद्मावती रानी के साथ बातें कर रही थी कि एक दासी ने आकर रानी से कहा—'देवी! आप के भाई का अचानक देहांत हो गया। आपकी भौजाई साथ सती हो गई।' यह सुन कर रानी शोक से आकुल हो गई। पद्मावती उनको समझाने-बुझाने लगी। बातों-बात में पद्मावती कह बैठी—'मैं सती होने को अच्छा नहीं समझती हूँ। क्योंकि जो पतिव्रता है उसे सती होने की जरूरत ही नहीं। वह तो पति के वियोग की बात सुनते ही प्राण दे देती है।' यह बात रानी के हृदय में शूल की तरह जाकर चुभ गई। उसने मन में सोचा—'ओहो! यह ऐसी घमंडी है! अच्छा! इसे एक पाठ पढ़ाना चाहिए।' उस दिन से वह मौके की ताक में रहने लगी।

एक दिन राजा जयदेव को साथ लेकर शिकार खेलने गए। मौका देख कर रानी ने कुचक्र रचा। वह पद्मावती से बातें कर रही थी कि बाहर से एक नौकरानी रोती-पीटती आई और बोली—'देवी! गजब हो गया! समाचार आया है कि शिकार खेलते समय अचानक एक बाघ झपटा और जयदेव को उठा ले गया!' यह बात कान में पड़ते ही पद्मावती के मुँह से एक आह निकली और उसकी आँखें बन्द हो गईं। उसके प्राण-पखेरू उड़ गए। इतने में शिकार खेल कर जयदेव के साथ राजा लौट आया। आते ही यह दुखद वार्ता कानों में पड़ी। उसने सोचा—'यह कैसा अन्याय हुआ? इस पाप का मूल मैं हूँ।' यह सोच कर उसने राजकुमार को गद्दी पर बिठा दिया और खुद जल मरने की तैयारी करने लगा। चिता में प्रवेश करने के पहले राजा जयदेव के पास पहुँचा और उसके पैरों पर गिर पड़ा—'देव! मैं घोर पापी हूँ। आप मुझे क्षमा कीजिए।' यह कह कर उसने पद्मावती के अकाल मरण की बात कह सुनाई। लेकिन जयदेव जरा भी चिंतित न हुआ। उसने भगवान के सामने जाकर, ध्यान-मग्न हो कर चौबीस अष्टपदियों का गान किया। भगवान प्रसन्न हो गए और पद्मावती उठ खड़ी हुई। 'जो इन अष्टपदियों का गान करेंगे वे मुक्त हो जाएँगे।' यह वर देकर भगवान अंतर्धान हो गए। ये अष्टपदियाँ गीत-गोविन्द में हैं। भक्त-समाजों के बीच आज भी जयदेव के गीत-गोविंद का बड़ा आदर-मान है। प्रेम और भक्ति के वैसे मधुर गान शायद ही दुनिया की किसी दूसरी भाषा में पाए जाएँ। रसिकों का तो वह कंठहार ही है।

पोल खुल गई!

उस जिले में सब से प्रसिद्ध ग्रांट-स्कूल था भोलू मास्टर जी का। वह नीलापुर से ढाई कोस की दूरी पर बालू-गाँव में था। ग्रांट-स्कूल उसे कहते हैं जिसे सरकार से एक मुश्त मदद मिलती है। हर साल भोलू मास्टर को सरकार से रुपया मिलता था। इसलिए उनकी पाँचों उगलियाँ घी में रहती थीं। जब जब सरकारी अफसर स्कूल का निरीक्षण करना चाहता, तब तब भोलू मास्टर अपना काला कोट पहन लेता, सिर पर पगड़ी रख लेता और बगल में स्कूल के बही-खाते दबा लेता था। फिर तरह तरह के उपाहार और खाने-पीने की चीज़ें लेकर अपने चेलों-चाटियों के साथ वह तुरंत नीलापुर जाता। वहाँ जाकर अफसर के दर्शन करके विनय-पूर्वक नमस्कार करता और खाने-पीने की चीज़ें उनके सामने रख देता। जब अफसर खा-पी चुकते तो कुछ लड़कियाँ आकर उनके गले में मालाएँ डाल देतीं और उनका गुण-गान करने लग जातीं। इससे अफसर का मिजाज नरम पड़ जाता। जब कभी वे लड़कों से कुछ सवाल करते तो लड़के उनके हाथ में कुछ-न-कुछ भेंट रख देते। फिर भोलू मास्टर अफसर से कहने लगते—'हुजूर! यह सब आपकी कृपा का फल है। मैं बहुत पुराना अध्यापक हूँ और सेवा में लगा हुआ हूँ। आज मेरे स्कूल में लड़कों की संख्या २५० है। अभी एक एक दर्जे के कुछ लड़कों को चुन लाया हूँ। आप इनकी परीक्षा करके समझ लीजिए कि बस, सारे स्कूल की परीक्षा हो गई।' यह कह कर वह बगल से बहियाँ निकाल कर अफसर की मेज पर रख देता था। अगर अफसर कहता—'मास्टर साहब! तो हम चलें आप के यहाँ?' तो भोलू मास्टर झट जवाब देता—'हुजूर! इसमें हमें क्या उज्र? लेकिन एक भारी दिक्कत है हुजूर!

सुनंदा देवी
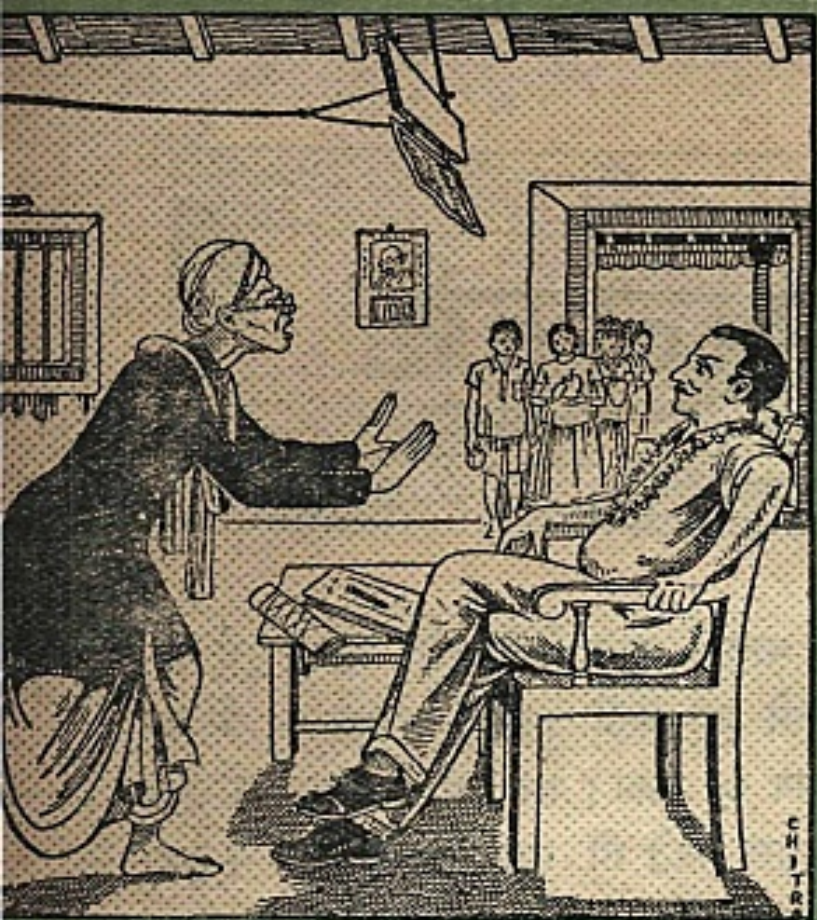
हमारे गाँव में कोई सवारी नहीं जाती। पाँच मील पैदल ही चलना पड़ता है। रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ है। जंगल-झाड़ियों से जाना पड़ता है। रास्ते में साँप-बिच्छू दीख पड़ते हैं। हम लोग तो आदी हो गए हैं। फिर भी हम उस राह से जाने में बहुत घबराते हैं।' मास्टर लंबा-चौड़ा वर्णन करके कहते। 'अब ऐसे गाँव में जाकर क्यों आफत में फँसूँ?' वह अफसर मन में सोचने लगता और वहीं बैठे-बैठे निरीक्षण-बही में मास्टर के स्कूल की तारीफ लिख देता था। इस तरह भोलू मास्टर का स्कूल बहुत मशहूर हो गया और वह गाँव में बैठे बैठे ही सरकारी मदद पाने लगे। एक बार शिक्षा विभाग के एक अफसर नीलापुर आए। उनके आने की बात मालूम होते ही भोलू मास्टर अपनी आदत के मुताबिक बहियाँ काँख में दाब कर और लड़कों के हाथ डालियाँ सजा कर अफसर के सामने पहुँच गए। वह अफसर उन्हें देखते ही मुसकुरा उठा और बोला—'आइए मास्टर साहब! आपके स्कूल के बारे में मैंने पिछली रिपोर्टें पढ़ ली हैं। बड़ी खुशी हुई। रिपोर्टें पढ़ने के बाद तो आपका स्कूल देखने के लिए मेरा मन मचल उठा। मैं आपके यहाँ आने ही वाला था कि आप यहाँ आ पहुँचे। अच्छा ही हुआ! अब आप के साथ ही साथ चलूँगा।' अफसर की बात सुनते ही भोलू मास्टर का मुँह फक हो गया। उनके पैर तले धरती खिसक गई। वह सिर्फ इतना ही बोल सके—'मेरे गाँव आप आ सकेंगे?' पर थोड़ी देर में अपने आप को सम्हाल कर उन्होंने पुराना पाठ पढ़ना शुरू कर दिया कि उनके यहाँ जाने में कैसी कैसी दिक्कतें हैं! लेकिन उस अफसर ने सब कुछ सुन कर कहा—'मास्टर साहब! आप कुछ फिक्र न कीजिए! मैं भी देहात का रहने वाला हूँ।

मेरे गाँव का रास्ता तो आपके गाँव के रास्ते से भी खराब है। काँटों का चुभ जाना, साँपों का पैरों में लिपट जाना, आदि बातों से तो हमारे यहाँ बच्चे भी नहीं डरते। मुझे तो बचपन से ही पैदल चलने की आदत है।' उनको इस तरह अपनी जीवन-कहानी सुनाते देख कर भोलू मास्टर हक्के-बक्के रह गए। ऐसा मालूम पड़ा कि ये टाले नहीं टलेंगे। इसलिए घबरा कर तुरंत कहा—'अच्छा! हुजूर! अब मैं जाता हूँ। आप पीछे आइएगा।' यह कह कर वे दौड़ते-दौड़ते चले गए। जल्दी जल्दी घर पहुँच कर भोलू मास्टर ने एक सेर चने जोर गरम खरीदा और लड़कों को जमा कर लाने चले। लेकिन तब तक अफसर उस गाँव में आ गए थे। उन्होंने उस गाँव में जाकर पूछ-ताछ की तो पता चला कि उस गाँव में कोई स्कूल है ही नहीं। हाँ, जब कोई अफसर नीलापुर आ जाता है तो मास्टर कुछ लड़कों को मिठाई का लालच देकर वहाँ ले जाकर हाजिर करता है। थोड़ी देर में भोलू मास्टर ने कुछ लड़कों को जमा करके अफसर के सामने ले जाकर कहा—'हुजूर! आप गुस्सा न होइए! मेरा स्कूल तो अफसरों की कृपा के कारण चलता आया है। वह

दिखाई नहीं देता। इससे क्या? वह स्कूल है मेरे, लड़कों के और आपके हृदय में! इस साल मेरी तकदीर अच्छी नहीं मालूम होती। नहीं तो आपको इतना कष्ट क्यों होता?' लेकिन अफसर का क्रोध और भी भड़क गया। 'हाँ! सचमुच इतने दिनों आपकी तकदीर अच्छी थी। मैं आपकी पोल आज ही खोलता हूँ और रिपोर्ट लिखता हूँ। जिन अफसरों के अहदीपन से आपको इतना फायदा पहुँचा उनकी भी खबर लूँगा। मुझे अफसोस है तो इस बात का कि आपने इतने लड़कों की पढ़ाई खराब कर दी।' यह कह कर अफसर उलटे पाँव लौट गए।

पुराने जमाने में किसी समय कलिंग के एक राजा ने घोषणा की—'हम एक ऐसा अपूर्व देवालय अपने राज के कोणार्क नामक प्रदेश में बनवाना चाहते हैं जैसा किसी ने कभी देखा-सुना तक न हो। इसके लिए हम सोलह साल की अवधि देते हैं। जो यह मंदिर बनाएँगे हम उन्हें एक लाख मोहरें देंगे और एक अच्छी जागीर देंगे। लेकिन अगर वे उक्त अवधि में काम पूरा न कर सकेंगे तो उनका सिर काट कर किले के कंगूरे पर लटका दिया जाएगा।' राजा की उस घोषणा में पशोपेश की कोई गुँजाइश न थी। बहुत लोगों ने यह घोषणा सुनी और सुन कर चुपचाप चले गए। राजा ने जो पुरस्कार देने का वादा किया था उससे लोगों का मन ललचा जाता था। लेकिन काम पूरा न होने पर जो दंड निश्चित था उसे पढ़ते ही ललाट पर पसीना निकल आता था। इसलिए वे लोग चुपचाप अपनी राह चले जाते थे। आखिर भीम नामक शिल्पी के कानों में यह घोषणा पड़ी। भीम कोई मामूली शिल्पी न था। उससे सिर्फ राजे-महाराजे ही काम करा सकते थे। लेकिन वैसा कोई सहारा न मिलने के कारण वह एक छोटे से गाँव में रहता था और बड़ी गरीबी में दिन काटता था। जिस तरह चातक स्वाति की वर्षा की राह देखता रहता है उसी तरह भीम भी मौके की ताक में बैठा हुआ था। राजा की इस घोषणा की बात मालूम होते ही उसकी देह में एक नई फुर्ती आ गई। 'भगवान ने मेरे लिए यह अच्छा मौका दिया है। अब मैं संसार को अपनी कारीगरी दिखाऊँगा और राजा से जागीर और पुरस्कार पाऊँगा। इस गरीबी से मेरा पिंड छूट जाएगा और मैं सुख से

हृदय नाथ

जीवन बिताऊँगा। इस गरीबी में अगर लाख बरस की भी आयु हो तो क्या फायदा? जान रही या गई, इस बार मैं अपना भाग्य जरूर आजमाऊँगा।' यह सोच कर भीम अपने मन में फूल उठा। अब उसने जरा भी देर न की। घर के झंझट की उसने तनिक भी चिंता न की। उसकी स्त्री गर्भिणी थी, पर शिल्पी ने उसकी ओर भी ध्यान न दिया। एक दिन वह चुपके से उठा और राजा के पास जाकर दर्शन करके अपना इरादा जताया। राजा ने कहा—'जल्दी न करो! पहले अच्छी तरह मन में सोच-विचार लो!' लेकिन भीम ने कहा—'मैं सब कुछ सोच-विचार कर ही आया हूँ। मेरा यह पक्का निश्चय है।' यह कह कर उसने अपनी प्रतिभा और सामर्थ्य के बारे में राजा को बताया। राजा भी बहुत खुश हुआ। उसने सोचा—'यह अन्य शिल्पियों सा नहीं है। इसे देखने ही से पता चलता है कि यह मेरा मंदिर बना सकता है। जब मेरा मंदिर बन जाएगा तो दूर दूर के लोग उसे देखने आएँगे और सोचेंगे—'ऐसा मंदिर कहीं नहीं है। धन्य है वह राजा जिसने यह मंदिर बनवाया है!' इस से बढ़ कर मुझे और क्या चाहिए?' जब राजा चाहेगा तो उसे किस चीज़ की कमी होगी? मंदिर बनाने के लिए चारों ओर सामग्री जमा की जाने लगी। कई हजार राज लोग आए। लाखों कुलियों के आने से उस जगह कई बस्तियाँ तैयार हो गईं। एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं; पूरे सोलह बरस होते होते राजा का मंदिर पूरा होने को आया। एक सौ अस्सी गज से भी ज्यादा ऊँचा था वह। वह मंदिर अन्य मंदिरों सा नहीं था। उस में विशेषता यह

थी कि वह मंदिर करीब चौथाई मील तक समुंदर में घुसा हुआ और सूरज की ओर रुख किए था। याने सबेरा होते ही बालारुण की कोमल किरणें पहले उस मंदिर को नहलातीं और पीछे दुनिया पर पड़ती थीं। भीम ने कलश-निर्माण भी कर लिया। केवल उसको मंदिर पर चढ़ाना बाकी था। कलश को दो सौ गज ऊँचे मंदिर पर चढ़ाना भी तो कोई आसान काम नहीं था? शिल्पी भीम और उसके नीचे काम करने वाले हजारों कारीगरों को कोई उपाय न सूझा कि क्या किया जाए? सोलह साल की अवधि पूरी होने में अब सिर्फ़ दस दिन ही बाकी रहे थे। दस दिन बीतते कितनी देर लगती? देखते-देखते नौ दिन बीत गए! अब सिर्फ एक ही दिन बाकी रह गया। अवधि पूरी होने पर राजा से कृपा की भीख माँगने में कोई फायदा न था। तो क्या शिल्पी भीम के सिर पर भी कँगूरे पर लटकना ही लिखा था? राज के सब लोग उत्सुकता से देखने लगे कि अब क्या होता है? इस तरह सारे राज में भीम के भाग्य पर बहस चल रही थी कि एक सोलह बरस के लड़के ने मंदिर के पास आकर भीम से कहा—'आर्य! मुझे मालूम है कि आप कौन हैं। आपके शिल्प की महानता भी मैं जानता हूँ। मुझे यह भी मालूम है कि आप आज किस चिंता में डूबे हुए हैं। सारा काम हो गया है। सिर्फ थोड़ी सी कसर रह गई है। सारे राज में आज यही चर्चा चल रही है। अब अफ़सोस करने से क्या फायदा है? सोचना तो यह है कि क्या किया जाए? मैं बालक हूँ। फिर भी इसके लिए भी मुझे एक उपाय सूझ गया है। आप आज्ञा दें तो मैं वह उपाय

बताऊँ ? मेरी हार्दिक इच्छा है कि आपको इस काम में पूरी सफलता मिले।' उस लड़के की बातें सुन कर भीम को बहुत अचरज हुआ। लेकिन उसका मुँह देखते ही उसके हृदय का सारा संशय दूर हो गया। उसके मन में एक नया उत्साह पैदा हुआ और सारी चिंता दूर हो गई। उस लड़के ने शिल्पी को वह उपाय बता दिया। भीम उछल पड़ा। झट उसने दो बड़े बड़े मस्तूल मँगाए और उन्हें मंदिर से टिका कर खड़ा कर दिया। फिर कलश को लोहे की साँकलों से बाँधा और उन साँकलों का दूसरा सिरा मंदिर पर लोहे के एक गोले से घुसाया। फिर उसने बहुत से आदमियों को साँकल खींचने को लगा दिया। साँकल खिंचते ही कलश उठा और आसानी से मंदिर पर पहुँच गया। मंदिर-निर्माण का काम पूरा हो गया! भीम कृतार्थ हो गया। अब उसे कोई खतरा न था। उसने दौड़ कर लड़के को गले से लगा लिया। सारे राज में उस अपूर्व, अनूप मंदिर की चर्चा होने लगी। कारीगर खुशी खुशी अपने घर लौटे। उस लड़के को साथ
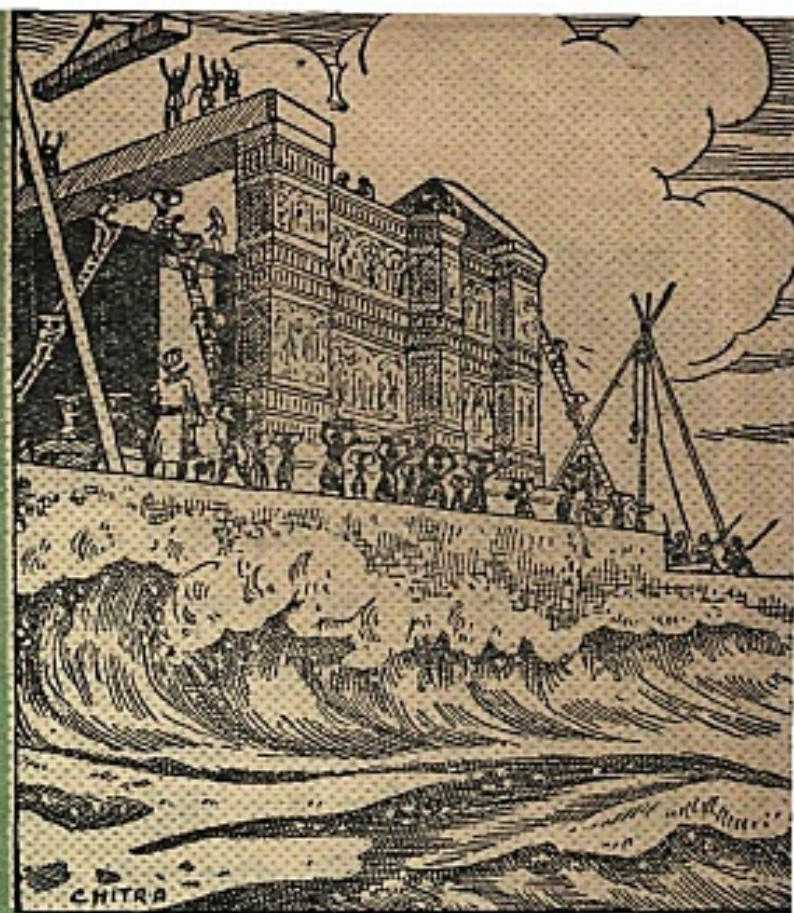
लेकर भीम भी अपने घर चला। रास्ते भर भीम के मुँह से कोई बात न निकली। वह मन ही मन कुछ सोचता चला जा रहा था। वह फिर चिंता में डूब गया था। यह देख कर उस लड़के ने सोचा—'यह कैसा आश्चर्य है! ये क्यों नहीं पूछते कि तुम कौन हो? कहाँ से आए हो? क्या ये नहीं सोचते कि मैंने एक बड़े संकट से इन्हें बचाया? अच्छा, जल्दी क्या है? ये जब पूछेंगे, तभी बताऊँगा।' यह सोच कर वह चुपचाप भीम के पीछे पीछे चलता रहा। भीम चुप्पी साधे हुए था। लेकिन उसके मस्तिष्क में

खलबली मची हुई थी। 'इतनी मेहनत उठा कर मैंने सारा काम किया। लेकिन अंत में इसी लड़के के प्रभाव से वह पूरा हुआ। इसे देखने से पता चलता है कि यह बड़ा बुद्धिमान और होनहार है। अगर यह जीता रहा तो जरूर इस मंदिर से बड़ा और अपूर्व और एक मंदिर बनाएगा। ऐसा हुआ तो फिर कौन मुझे पूछेगा? कौन मुझे याद करेगा? उससे मेरा नाम मिट्टी में मिल जाएगा। इसलिए इसे जीता नहीं छोड़ना चाहिए।' उसने सोचा। भीम के मन में ज्यों ही यह बुरी नीयत पैदा हुई त्यों ही वह मौका देखने लगा। थोड़ी दूर जाने पर जब निर्जन-प्रदेश आया तो उसने तलवार निकाल कर अचानक लड़के का सिर काट लिया। एक क्षण में यह सब हो गया। तब भीम के मन को चैन हुआ। वह शांत-चित्त से घर पहुँचा। घर जाकर उसने देखा कि उसकी स्त्री वहाँ आ गई है। 'तुम कब आ गईं? मुझे खबर क्यों न भेजी?' उसने पूछा। लेकिन उसकी स्त्री ने जैसे यह नहीं सुना। 'लड़का कहाँ है?' उसने उतावली से पूछा। 'लड़का कौन? कैसा लड़का?' भीम ने कलेजा थाम कर पूछा। 'यह क्या? आपने अपने लड़के को नहीं पहचाना? हमारा लड़का ही तो आपको कलश चढ़ाने का उपाय बताने आया था! क्या वह आपके पास नहीं पहुँचा?' उसकी स्त्री ने घबरा कर पूछा। यह सुनते ही भीम के मुँह से एक भयंकर चीख निकली—'अरे! तो क्या वह मेरा ही लड़का था? हाय! तो क्या मैंने अपने लड़के का ही सिर काट डाला? ईर्ष्या! सत्यानाशिनी! तूने मुझे नष्ट कर डाला!'

यह कह कर भीम धड़ाम से पृथ्वी पर गिरा और पछाड़ खाकर सदा के लिए सो गया! सचमुच ईर्ष्या वह आग है जिससे अपना ही घर जल जाता है।
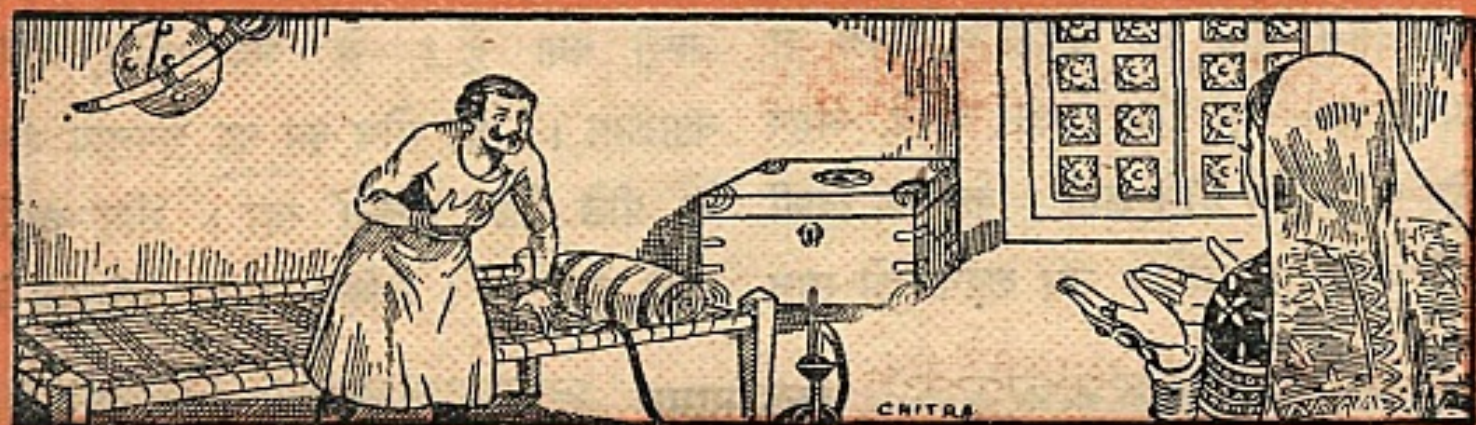
कहते हैं कि किसी राजा के एक फुलवारी थी और उस फुलवारी में चहकती रहती थी एक बुलबुल। जब बहार आई तो सारी फुलवारी खिल उठी। एक एक लता लहरा उठी। हर पेड़ में कोंपलें निकलने लगीं। सुगंध से भर कर हवा भी मस्त हो उठी। बस, बुलबुल चहक उठती और पेड़ पेड़ पर फुदकती फिरती थी। उसकी चहक से सारा बाग गूँज उठता था। एक दिन अचानक न जाने, कहाँ से और एक बुलबुल वहाँ आ गई और फुलवारी में चहकने लगी। वह बाग उसे ऐसा अच्छा लगा कि वह मुग्ध हो गई और सोचने लगी—'अहा! अब यहीं रम जाऊँ।' वह एक आम की डाल पर बैठ कर गाने लगी। उसे देख कर अपने बुलबु ने सोचा कि उसके साथ गला मिलाकर गाएँ। इसलिए वह भी उसकी बगल में जा बैठी और गाने लगी। दोनों में धीरे धीरे दोस्ती हो गई और दोनों मिल कर बाग में घूमने-फिरने लगीं। एक दिन अपने बुलबुल ने साथिन से कहा—'मुझसे ब्याह कर लो!' तब उसने जवाब दिया—'कल सबेरा होने के पहले ही तुम मुझे एक ऐसा नया फूल ला दो, जिसे मैंने कभी नहीं देखा हो। तब मैं तुमसे ब्याह कर लूँगी।' तब बुलबुल अपना गाना छोड़ कर, हरेक बेल-लता के पास जाकर पूछने लगी—'क्या तुम मुझे एक नया फूल दोगी?' लेकिन उन्होंने जवाब दिया—'हमारे फूल तो सभी पुराने हैं। हम नहीं जानतीं कि नए फूल कैसे फूलें।' रात भर फुलवारियों में भटक कर निराश बुलबुल आखिर एक कँटीली झाड़ी पर बैठ गई और आँसू बहाने लगी। तब उस झाड़ी ने पूछा—'प्यारी बुलबुल! क्यों इस तरह आँसू बहा

रही हो ?' 'अरे! फलने-फूलने वाली सब लताओं ने तो जवाब दे दिया! अब तुम मेरा हाल पूछ कर क्या करोगी?' बुलबुल ने कहा और फिर आँसू बहाने लगी। लेकिन जब झाड़ी ने हठ किया तो बुलबुल ने सारा किस्सा उससे कह सुनाया। सुन कर झाड़ी ने कहा—'अरे! इतनी सी बात पर आँसू बहाती हो? सुनो, आज पूनों है। चाँद निकल रहा है! तुम मेरे ऊपर सट कर बैठो और मेरे काँटों की तनिक भी परवाह न करके, अपने गले की सारी मिठास खर्च करके सबेरे तक गाती रहो। फिर तुम देखना, मैं तुम्हें कैसा अपूर्व कुसुम देती हूँ?' बुलबुल ने खुशी से उसकी बात मान ली। वह झाड़ी पर सट कर बैठ गई और गाने लगी। चारों ओर अमृत बरसने लगा। काँटों ने बुलबुल की रेशम सी मुलायम देह को छेद डाला। खून बहने लगा। लेकिन उसने कुछ भी परवाह न की। वह और भी एकाग्र होकर गाने लगी। आखिर वह गाना सुन कर कँटीली झाड़ी का कठोर हृदय भी फट गया। उसकी डालियों पर कलियाँ चटक चलीं। हरेक कली पर बुलबुल का खून बह कर रंगने लगा। हरेक कली में बुलबुल के गले की मिठास और चाँदनी की कोमल कांति मिल गई। सबेरा जब हुआ तो उस कँटीली झाड़ी पर अपूर्व, अरुण पुष्प खिल रहे थे। उस फूल को देख कर बुलबुल को बहुत खुशी हुई। उसने फूल तोड़ ले जाकर अपनी साथिन को भेंट किया। फिर दोनों ब्याह कर सुख से रहने लगे। उस दिन से बुलबुल हर रात को गाती रहती है। और उस कँटीली झाड़ी का नाम क्या है, जानते हो? गुलाब!

सङ्केत

दाएँ से बाएँ :

१. माफी

३. सब

५. नया

७. राक्षस

९. जलाना

११. रणवास

१३. लँबा-चौड़ा

१५. रात

१६. दाना

१७. सितारा

ऊपर से नीचे :

२. मनुष्य

३. प्रमाण-पत्र

४. प्राप्त

६. एक अस्त्र

८. दृष्टि

१०. सदा

११. किसान का औजार

१२. मौत

१३. विनय वाली

१४. बेल

रंगीन पानी

बाजीगर अपने नजदीक ही मेज पर एक पानी से भरी सुराही और सात खाली गिलास रखेगा। रंगमंच के पिछवाडे एक काला परदा लटकता होगा। जिस जगह वह परदा होगा वहाँ खूब अँधेरा होगा। रंगमंच पर बाकी जगह खाली होगी। अगर दर्शक लोग चाहें तो उन्हें गिलासों को साबुन से धो लेने का मौका भी देना होगा। तब बाजीगर सुराही में से पानी एक गिलास में ढालेगा और दर्शकों से पूछेगा कि 'आपको किस रंग का पानी चाहिए।' समझ लो, कि किसी ने कह दिया—'लाल रंग का पानी चाहिए!' तब वह गिलास ऊपर उठा कर पानी को जरा हिला-डुला देगा। बस, तुरंत पानी लाल हो जाएगा। समझ लो किसी ने कह दिया—'हरे रंग का पानी चाहिए।' वह और एक गिलास में पानी ढालेगा और उस गिलास को भी ऊपर उठाकर उसी तरह हिलाए-डुलाएगा तो पानी हरा बन जाएगा। इसी तरह सातों गिलासों में वह सुराही का पानी ढाल कर उन सातों गिलास के पानी को सात रंगों का बनाएगा। अब आप समझेंगे कि बाजीगर ने उस पानी में कोई दवा मिला दी है या उसने और कोई जादू कर दिया है। लेकिन बात ऐसी नहीं है। इसका रहस्य सुनिए—

मंच पर बाजीगर के सिर पर एक डोरी टँगी होगी जिसमें आध आध गज लंबे सात रंगों के धागे लटकते होंगे। वे

धागे एक दूसरे से थोड़ी दूरी पर लटकते होंगे। लाल, पीला, हरा, काला, नीला, बैंगनी और नारंगी रंगों के धागे लटकते होंगे। उसकी दाईं ओर से पहला धागा लाल होगा। उसके बाद का धागा पीला होगा। उसके बाद काला। इस तरह बाजीगर पहले ही उन्हें एक सिलसिले से बाँध रखेगा और वह सिलसिला याद कर लेगा। हाँ, धागे जहाँ लटकते हों वहाँ पूरा अँधेरा हो। यह जरूरी है। क्योंकि रोशनी होने पर दर्शक लोग वे धागे देख लेंगे। इस से स्पष्ट है कि यह तमाशा अँधेरे में ही किया जा सकता है। जब दर्शक कहेगा कि मुझे फलाने रंग का पानी चाहिए तो बाजीगर पानी से भरा गिलास उठा कर उस रंग वाले धागे के पास ले जाएगा। वह गिलास को सावधानी से ऐसे पकड़ेगा जिसमें धागा पानी के अंदर आ जाय। फिर वह गिलास को जरा हिला-डुला देगा तो पानी का रंग बदल जायगा। लेकिन एक जरूरी बात है, जिस पर ध्यान रखना चाहिए। यह काम इतनी सफाई के साथ और इतनी जल्दी करना होगा जिसमें दर्शक लोग जान न पाएँ कि क्या हो रहा है। इसके लिए थोड़े अभ्यास की जरूरत है। यह देखने में तो बड़ा आसान तमाशा जान पड़ता है। लेकिन वास्तव में उतना आसान नहीं है। अगर बाजीगर जरा भी असावधानी करेगा तो उसका भंडा फूट जायगा।

जो इस सम्बन्ध में प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेजी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मेजीशियन
१२/२ ए, जमीर लेन, बालीगंज,
कलकत्ता - १९.

रङ्ग भरो—३-रे चित्र की कहानी

राजकुमार किसी न किसी तरह उस दुर्गम बरफीले पहाड़ पर चढ़ गया। उसे पहाड़ पर वह महल भी दिखाई दिया। उसे उस महल का बड़ा सा दरवाजा भी दिखाई दिया। वह खुला ही था; इसलिए राजकुमार ने सोचा कि वह आसानी से अंदर चला जाएगा। लेकिन जब दरवाजे पर कदम रखा तो करोड़ों शेरों के दहाड़ने की आवाज से उसके कानों की झल्लियाँ फटने लगीं। उसने बहुत कोशिश की। लेकिन यह न मालूम कर सका कि वह आवाज कहाँ से, कैसे आ रही है। तब उसने सोचा कि यह सब माया का जाल है और साहस करके आगे बढ़ गया। तुरंत वह आवाज बंद हो गई। थोड़ी दूर जाने पर उसे और एक बड़ा सा दरवाजा दिखाई दिया। वहाँ जाते ही उसे आँखें चकाचौंध करने वाली भयंकर लपटें दिखाई दीं। लेकिन वह बिलकुल नहीं डरा और लपटों में से आगे बढ़ गया। लपटें गायब हो गइ। और थोड़ी दूर जाने पर उसे एक ऐसा विचित्र सरोवर दिखाई दिया कि वह अपनी आँखों पर आप ही विश्वास न कर सका। मालूम नहीं, वह सरोवर कितना गहरा था? लेकिन जब वह साहस करके उसमें उतर पड़ा तो देखा—वहाँ पानी है ही नहीं। तब उसने जान लिया कि यह भी जादू है और निश्शंक होकर आगे बढ़ गया। तब तक राजकुमार बहुत थक गया था। लेकिन उसने अपनी धुन न छोड़ी। आखिर उसे वे महात्मा, जिन्हें देखने के लिए वह इतनी दूर आया था ध्यान में मग्न दिखाई दिए। राजकुमार ने सोचा कि अभी अमास नहीं बीती है और महात्मा आँखें खोल कर जरूर उससे बातें करेंगे। इसलिए वह चुपचाप एक ओर खड़े होकर उनके ध्यान तोड़ने की राह देखने लगा। राजकुमार नहीं जानता था कि अमास कभी की बीत गई है और महात्मा फिर ध्यान में डूब गए हैं।

इस तरह कई दिन भूखे-प्यासे खड़े रहने के बाद राजकुमार थकावट के मारे बेहोश होकर उन महात्मा पर जा गिरा। महात्मा ने आँखें खोले बिना ही अपना दाहिना हाथ उठाया। तुरंत राजकुमार सीधे उठ कर छत से लटकने लगा।

रङ्ग भरो (कहानी) : चित्र ४

करके देखो !

पानी से भरी हुई एक बोतल ले लो। एक कमरे में घुस कर किवाड़ बंद कर लो। काले परदों या कागजों से खिड़कियों को भी ढँक कर कमरे को खूब अँधेरा कर दो। अब खिड़की में लगे हुए परदे या कागज के बीच
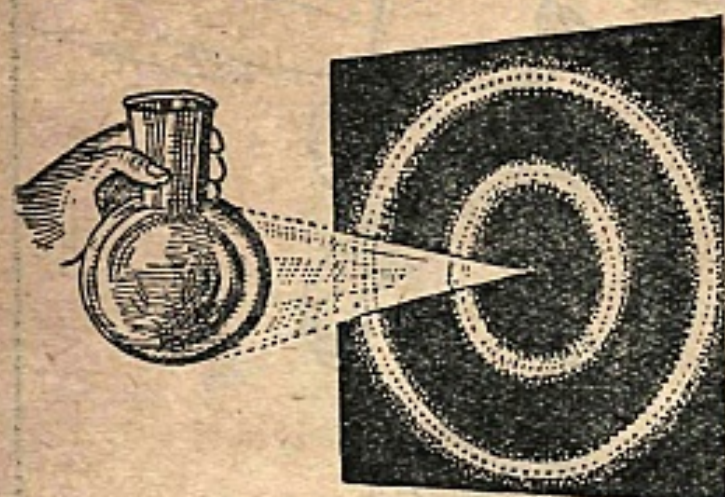
में एक छोटा सा छेद कर दो। इस छेद से रोशनी कमरे में घुस आएगी। अब उस रोशनी के ठीक सामने पानी से भरी हुई बोतल रख दो। तब खिड़की में लगे हुए काले परदे पर इंद्र-धनुष दिखाई देने लगेगा।

* * *

एक मोम-बत्ती सुलगा कर मेज पर रख दो। फिर एक पतली कागज की तख्ती या कार्ड ले लो। मोम-बत्ती की लौ को अपने मुँह से थोड़ी दूर रख कर कार्ड को उसके और अपने मुँह के बीच कर लो। अब उस कार्ड पर जोर से फूँको। कार्ड के उस पार से लपट, तुम्हारी ओर याने कार्ड के इस पार आ जाएगी।

* * *

दो आलपिन और एक पैसा (बीच में छेद वाला) ले लो। पैसे को मेज पर रख कर दोनों पिन दो हाथों में पकड़ लो। इनकी

नोकों से पैसे को पकड कर मेज पर से उठा लो (जैसे चित्र में दिखाया है; उस तरह)। अब तुम पैसे को फूँकोगे तो वह पहिए की तरह घूमने लगेगा।

---

	1 क्ष	2 मा		3 स	र्व	
4 ब		5 न	वी	न		6 धा
7 दा	8 न	व		9 द	10 ह	न
	ज				मे	
11 ह	12 र	म		13 वि	शा	14 ल
ल		15 र	ज	नी		ता
	16 क	ण		17 ता	रा	

Controlling Editor : SRI CHAKRAPANI

Chandamama, October '51 Photo by N. Ramakrishna

सलोनी हँसी

रङ्ग भरो (कहानी) चित्र ३